महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015
e-paper:www.srushtiagronews.com

Posted atMalad NDPO Dated of Posting
4th to 5th for (1st to15th issue)
18th to 19th for (15th to 30th Issue)

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 2 अंक - 07 | मुंबई, 1 से 15 मई 2014 | मुल्य-2/- रुपए पृष्ठ -8

हल्दी उत्पादन तकनीक
(पृष्ठ 7 पर)

ओलावृष्टि प्रभावित किसानों से न करें कर्ज वसूली : हाईकोर्ट

मुंबई. बॉम्बे हाईकोर्ट ने बैंकों व कोआपरेटिव क्रेडिट सोसायटी को निर्देश दिया है कि वे कृषि संबंधी कर्ज लेने वाले ओलावृष्टि से परेशान किसानों से वसूली न करें। पहले हाईकोर्ट ने सिर्फ फसली ऋण लेने वाले किसानों को ही राहत दी थी, पर बुधवार को इसका दायरा बढ़ाते हुए वसूली के संबंध में महाराष्ट्र सरकार को आवश्यक निर्देश जारी करने को कहा है। साथ ही ओलावृष्टि से प्रभावित हुए पशुओं को भी उपचार की सुविधा मुहैया करने का निर्देश दिया है। न्यायमूर्ति मोहित शाह व न्यायमूर्ति एमएस शंकलेचा की खंडपीठ ने यह निर्देश गोरख घडगे नामक किसान की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान दिया।पशुओं के उपचार के लिए उचित व्यवस्था करें : इस बीच ओलावृष्टि के कारण पशुओं

के उपचार में उपेक्षा का मुद्दा भी उठा।

इस पर सरकारी वकील ने कहा कि पशुओं के उपचार के लिए बनाए गए अस्पतालों में पशु चिकित्सकों को तैनात किया गया है। इस पर खंडपीठ ने सरकार को पशुओं के इलाज के लिए भी उचित व्यवस्था करने को कहा।

फैसलों को प्रचारित करने का निर्देश :

मुंबई खंडपीठ ने ओलावृष्टि प्रभावित किसानों के लिए उठाए गए कदमों को व्यापक रूप से प्रचारित करने का निर्देश दिया। इस संबंध में न्यायालय ने केंद्र व राज्य सरकार को एक रिपोर्ट भी पेश करने को कहा है।

निजी व्यापारियों को पक्षकार बनाने होगा विचार : एक अन्य याचिकाकर्ता की ओर से पैरवी कर रहीं वकील पूजा थोरात ने कहा कि कुछ किसानों ने फसल के अलावा अन्य कृषि कार्य हेतु निजी व्यापारियों से कर्ज लिया है। फसल बरबाद हो जाने के कारण ये किसान पैसे वापस नहीं कर पा रहे हैं, पर निजी व्यापारी किसानों पर पैसे वापस करने के लिए दवाब बना रहे हैं। इस पर खंडपीठ ने थोरात को एक अलग से आवेदन करने को कहा और अगली सुनवाई के दौरान विचार करने की बात कही।

सुनवाई के दौरान सरकारी वकील मिलिंद मोरे ने कहा कि सरकार ने अब तक ओलावृष्टि से परेशान 14 लाख 73 हजार 751 किसानों को मदद राशि दी है। पहले चरण में किसानों को 540 करोड़ रुपए, (शेष पृष्ठ 2 पर..)

राजस्थान सृष्टि एग्रो का लोकार्पण

जयपुर : विश्वकर्मा के विधायक नरपत सिंह राजवी का मानना है कि किसान तभी खुशहाल होगा जब उसे सही समय पर फसल कि सही कीमत मिल सके किसानों की बदौलत ही आज हम कृषि उत्पादों का निर्यात कर रहे है। इसलिए उन्हे अन्नदाता का दर्जा दिया गया है। किसानो तक कृषि तकनीक को पहुचाने मे कृषि पत्र पत्रिकाओं कि भूमिका का उल्लेख किया ! राजवी विश्वकर्मा इंड्रस्टी रिक्रेयशन क्लब मे सृष्टि एग्रो के कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे यहाँ सृष्टि एग्रो के राजस्थान संस्करण का लोकार्पण किया गया ! समारोह को संबोधित करते हुए पूर्व मुख्य सचिव एम एल मेहता ने कहा वर्तमान समय मे कृषि मे अधिक जागरूकता की आवश्यकता है! साथ ही इस पर हम सब को मिल कर काम कर ने की आवश्यकता है ! इस अवसर पर के वी के के गंगवाल ने कहा इसके लिए किसानों और वैज्ञानिकों को मिलकर काम करना होगा। इसलिए किसानों को भी आगे बढकर नई किस्मों को अपनाना चाहिए ताकि उत्पादन में बढोत्तरी हो सके। सृष्टि एग्रो के प्रधान संपादक सुरेश शर्मा ने कहा किसानो को गुणवत्ता खेती के लिये कृषि साहित्य का भी अध्यन करना चाहिये ! उन्होने समाचार पत्र की भूमिका व आवश्यकता के बारे मे बताया जा सके। इस अवसर पर सृष्टि एग्रो के जुझारू पत्रकार उदित शर्मा,अल्पेश माथुर, बलवंत, राजकुमार व कार्यकारी संपादक ऋतु कपिल को सम्मानित किया गया ! इस मौके पर काफी संख्या मे कृषि संबंधी अधिकारी ,

कम्पनी प्रतिनिधि प्रशासन के अधिकारी व गणमान्य जन उपस्थित थे।

भरपूर हो रही प्याज की आवक

नागपुर. इन दिनों कलमना बाजार में भारी मात्रा में प्याज की आवक हो रही है, जिससे इसके दाम में गिरावट दर्ज की जा रही है। शनिवार को बाजार में प्याज की 100 गाडियों की आमद रही, जिसमें से 50 सफेद प्याज और 50 गाडियां लाल प्याज की है। भरपूर हो रही आवक से प्याज के दाम में वृद्धि होने की संभावनाओं पर पूरी तरह से विराम सा लग गया है।

ओलावृष्टि के कारण किसानों का बहुत सा प्याज खराब हुआ है। इसके बावजूद किसान भारी मात्रा में अपना माल बाजार में बेचने के लिए ला रहे हैं। बाजार में मांग से भी अधिक प्याज की आवक हो रही है। यही कारण है कि प्याज के दाम बढने की अटकलों पर विराम लग गया है। आनेवाले सप्ताह में प्याज के दाम में और भी गिरावट आने की संभावना उन्होंने व्यक्त की है। बाजार में लाल प्याज 350 से 450 रुपए और सफेद प्याज 300 से 400 रुपए (प्रति 40 किलो) के हिसाब से बिक रही है।

बाजार में प्याज के दाम तो बढ़ रहे हैं, लेकिन आलू, लहसुन और अदरक के दाम में स्थिरता दिखाई दे रही है। बाजार में आलू की भी आवक काफी अच्छी है। अफजल ट्रेडिंग कंपनी प्रा. लि. कलमना के अनुसार बाजार में (भाव प्रति 40 किलो) नया आलू 600-700, सफेद प्याज (नई) 300-400, लाल प्याज (नई) 350-450, लहसुन नया 1000-1800, अदरक (प्रति 60 किलो) नई 5200-5500 रुपए बिक रही है।

विदर्भ के किसानों को मुआवजा

नागपुर। महाराष्ट्र के विदर्भ में बारिश से प्रभावित किसानों के बीच राज्य सरकार अब तक 71.41 करोड़ रुपये वितरित कर चुकी है। सरकार ने असमय बारिश और ओलावृष्टि की मार झेल रहे इन किसानों के लिए करीब सौ करोड़ मुआवजे की घोषणा की है। विदर्भ के 80 हजार से ज्यादा को किसानों को मुआवजे की राशि बांटी गई। बारिश से सबसे ज्यादा प्रभावित नागपुर के किसान हुए हैं।

IT कंपनी की सबसे आलीशान बिल्डिंग के आने से पंचायतें भी हो गई अमीर

हिंजवाड़ी (पुणे). पुणे-बेंगलुरू हाइवे पर बसे हैं दो गांव हिंजवाड़ी और माण। करीब दस हजार लोगों की बसाहट वाले इन गांवों को पिछले 15 वर्षों से लोग आईटी गांव के रूप में जानते है। इनके आसपास हैं सौ से अधिक सॉफ्टवेयर और नॉन सॉफ्टवेयर कंपनियां। राजीव गांधी आईटी पार्क प्रोजेक्ट के तहत ये कंपनियां यहां आईं। खूब फली-फूलीं। इनके यहां आने से ये दोनों पंचायतें महाराष्ट्र की सबसे अमीर पंचायत बन गईं। 10-12 करोड़ रुपए का टैक्स मिलता है इन कंपनियों से। लेकिन उससे ग्रामीणों की स्थिति में कोई अंतर नहीं आया। बल्कि हालात बदतर ही हुए हैं। खेती हाथ से गई। बदले में जो काम मिला भी, तो हाउसकीपिंग, ट्रांसपोर्ट और

सिक्योरिटी का। महिलाएं कैंटीन में खाना बनाने और पैकिंग का काम करती हैं। दो गांवों की औसत प्रति व्यक्ति आय 275 रुपए प्रतिदिन ही है।

इन गांवों में बदलाव न आने की वजह है शिक्षा का स्तर। सातवीं कक्षा तक के दो स्कूल भी इन्फोसिस सोशल फंड से 2011 में ही बने हैं। जिनमें पांच सौ बच्चे पढ़ रहे हैं। उसके आगे पढने के लिए पुणे ही जाना पड़ता है। बच्चों की पढ़ाई के लिए इतना संघर्ष यहां का हर परिवार नहीं कर पाता है। माण गांव के संतोष मोहिते जैसे कुछेक ही उदाहरण हैं। संतोष मोहिते का आज सालाना तीस करोड़ का करोबार है। वे कंस्ट्रक्शन बिजनेस में हैं। लेकिन इस मुकाम तक पहुंचने के लिए उन्होंने बहुत संघर्ष किया है।

दाल मिल में आग

नागपुर. लकडगंज क्षेत्र के स्माल इंडस्ट्रीज एरिया कीदाल मिल के गोदाम में आग लग गई। वहां रखीं 500 बोरियां जलकर खाक हो गईं, जिसमें सरकी ढेप भरी हुई थी। दमकल विभाग के चार वाहनों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। घटना में लाखों का नुकसान बताया जा रहा है।

लकडगंज स्थित स्माल इंडस्ट्रीज क्षेत्र में प्लाट नंबर 242 में श्री कमल पसारी की मेसर्स तिरुपति इंडस्ट्रीज है। बताया जाता है कि यह दाल मिल थी, जो पिछले कुछ समय से बंद पड़ी है। दाल मिल बंद हो जाने पर पसारी ने मिल के पिछले हिस्से में गोदाम बना दिया। पसारी इस गोदाम में जानवरों के खाद्य पदार्थ सरकी ढेप व दाल के बोरां का भंडारण किया था।

गोदाम में शार्ट-सर्किट होने से आग लग गई। आग लगने की सूचना दमकल विभाग को दी गई। दमकल विभाग ने लकडगंज फायर स्टेशन से तीन और सक्करदरा से एक दमकल वाहन को स्माल इंडस्ट्रीज परिसर में भेजा। आग ने गोदाम को पूरी चपेट में ले लिया था, जिससे गोदाम में रखीं सरकी ढेप की 500 बोरियां जलकर खाक हो गईं।

तहसील व विकास खण्डस्तर पर संवाददाताओं की आवश्यकता

मुंबई से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी कृषि पक्षिक समाचार पत्र **सृष्टि एग्रो** उपरोक्त राज्य के विकास खंड एंवम तहसील स्तर पर संवादाता नियुक्त करने है. संवादाता बनने के लिए कृषि विकास की जानकारी एंवम ग्रामीण कृषि से सम्म्बन्धित होना अति आवश्यक है !कृषि विषय के जानकार व कृषि आदान से जुडे व्यक्तियों को विशेष प्राथमिकता दी जाएगी ! संवाददाता की नियुक्ति कमीशन आधार पर होगी , संवादाता का मुख्य कार्य **सृष्टि एग्रो** के अधिक से अधिक सदस्य बनाना व विज्ञापन लेना रहेगा. अपने आसपास की घटनाओं पर नज़र रखना, व उसका समाचार सृष्टि एग्रो में भेजना प्रमुख दायित्व मे शामिल रहेगा. अगर आप उपरोक्त शर्तों से सहमत है तो सृष्टि एग्रो से जुडने के लिए सम्पर्क करें.

022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,
info@srushtiagronews.com

संपादकीय

मौसम की मार के बीच पिसती कृषि

जलवायु परिवर्तन के आशंकित संकटों को लेकर पिछले 20-22 सालों से दुनिया में घबराहट का माहौल बना हुआ है। इसी के चलते 1992 में रियो दि जनेरियो में आयोजित पहले पृथ्वी सम्मेलन से लेकर लगातार पृथ्वी सम्मेलनों का आयोजन होता आ रहा है। लेकिन दुखद पहलू यह है कि इसमें भी कोई ठोस नतीजा नहीं निकल सका है।

दोहा दौर की वार्ता को बचाने की मेजबान देश कतर द्वारा कोशिश किए जाने के बीच बस इतना ही हो सका कि क्योतो प्रोटोकॉल की अवधि बढ़ाने पर सहमति बन गई, जिसके माध्यम से 2020 तक धनी देशों में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित किया जाएगा। वार्ता की अवधि एक दिन तक बढ़ने के बाद भी 8 दिसंबर को वार्ता का समापन करने से पहले केवल एक समझौते तक पहुंचने के राष्ट्रों के संकल्प के बाद करीब 200 देशों ने क्योतो प्रोटोकॉल को अगले आठ साल तक कायम रखने पर सहमति भर जताई। दरअसल यह ऐतिहासिक समझौता इसी महीने के अंत में समाप्त हो रहा है इस पर 1997 में देशों ने सहमति जताई थी।

हालांकि नए समझौते के दायरे में केवल वे विकसित देश आएंगे जिनका वैश्विक ग्रीन हाउस उत्सर्जन में हिस्सेदारी 15 फीसदी से कम है। भारत के अलावा चीन और अमेरिका जैसे बड़े प्रदूषक देश इसके दायरे से बाहर होंगे।

बहरहाल, अमेरिका ने इस सम्मेलन के तहत खुद को किसी नए समझौते से जोड़ने की बात से इनकार किया है। वहीं, रूस ने प्रस्ताव को खारिज कर दिया जबकि जी 77 एवं चीन, बेसिक समूह के देशों ने दोहा के नतीजों का स्वागत किया है। यह घटनाक्रम वार्ताकारों द्वारा सात दिसंबर की रात भर जटिल ब्योरों और सभी के स्वीकार्य तथ्यों को लेकर किए गये विचार-विमर्श पर बात हुआ है। 12 दिनों तक चली इस वार्ता में गरीब देशों ने इस बात पर जोर दिया कि धनी देश ग्रीन हाउस गैसों में कटौती का ठोस वादा करें और गरीब देशों को वित्तीय मदद दें।

विकासशील देशों में जलवायु परिवर्तन का सर्वाधिक असर ग्रामीण और कृषि आधारित समुदायों पर पड़नेवाला है। फसलों के चक्र में परिवर्तन उनका नाश और लोगों के विस्थापन इस समस्या के अभिन्न अंग होंगे। दुनिया की आबादी में करीब 1.7 अरब लोग आज भी कृषि पर निर्भर हैं। इसलिए जलवायु परिवर्तन की कोई भी सार्थक बातचीत कृषि की उपेक्षा कर नहीं की जा सकती।

हालांकि, जलवायु परिवर्तन से होनेवाले नुकसान पर नियंत्रण के बड़े-बड़े दावे भी किए जा रहे हैं। लेकिन इन सबके बावजूद प्रकृति में बदलाव को रोका नहीं जा सका है। प्रभाव साफ हैं कि मानसून का चक्र बिगड़ रहा है। मौसम का मिजाज बदल रहा है। इसका असर दूरदराज तक गांवों, खेत-खलिहानों तक में हो रहा है। सबसे अधिक प्रभाव तो कृषि पर पड़ रहा है, जहां परंपरागत रूप से उत्पादित होती आ रहीं बड़ी संख्या में फसलों का नामो-निशान तक मिट गया है। इन फसलों की जगह शुद्ध रूप से बड़ी कंपनियों द्वारा निर्देशित-नियंत्रित बीजों और उनके द्वारा बताए बीजों ने ले लिया है, जिसके पैदावार और पुनरुत्पादन पर उनका ही पूरा नियंत्रण हो रहा है। कम पानी और रासायनिक खादों के बिना पैदा होने वाली कई फसलें समाप्त हो चुकी हैं और उसकी जगह नई फसलों ने ले लिया है। इनमें बड़ी मात्रा में रासायनिक खादों, कीटनाशकों, परिमार्जित बीजों और सिंचाई की जरूरत पड़ती है।

इसके कारण ग्राम्य जीवन में भी बदलाव आया है। तत्काल कृषि की जरूरतों के मुताबिक हल-बैलों की जगह ट्रैक्टरों ने ले लिया है और परंपरागत अनुभवों और ज्ञान के आधार पर चली आ रही खेती की जगह अब विशेषज्ञों द्वारा निर्देशित खेती लेती जा रही है। इस तरह की खेती व्यापार का रूप ले रही है, जिसमें समाज की न तो कोई भूमिका होती है और न ही उनकी जरूरतों और इच्छाओं का सम्मान। इस प्रकार अनियमित मौसम की वजह से खेती व खाद्य सुरक्षा की समस्या उत्पन्न हो रही है।

गर्मी, जाड़े और बरसात के मौसम में कुछ फेरबदल से फसलों की बुवाई, सिंचाई और कटाई का मौसम बदला और जल्दी खेती करने के दवाब में पशुओं को छोड़ मोटर चालित यंत्रों पर निर्भरता आई। इनका परिणाम हुआ कि पूरी तरह किसानी पर निर्भर रहनेवाला समाज बुरी तरह से ध्वस्त हो गया। क्योंकि खेती घाटे का सौदा हो गया। अब हर परिवार को खेती के अलावा कोई दूसरा काम करना मजबूरी हो गई।

दूसरी ओर जिले में परंपरागत तौर पर उगनेवाली फसलों जिन्हें आमतौर पर मोटा अनाज कहा जाता है, फसल चक्र के अव्यवस्थित होने से नष्ट हो गए हैं। अब तो इनके बीज भी गांवों में देखने को नहीं मिलते। इनमें शमां, चीना, कोदो, मडूवा, उड़द और भादों में बोए जानेवाला मक्का की फसल है। इसके साथ ही साल भर में तैयार होनेवाला अरहर भी अब देखने को नहीं मिलता। इसके कारण पशुओं को चारे की कमी हो रही है तो जलावन का संकट भी आ रहा है। इससे पशु गांवों में लगभग खत्म हो गए हैं। इससे पशुओं का उपयोग खेती में खत्म हुए और इसकी जगह डीजल आधारित ट्रैक्टर जैसे मशीन आ गए हैं। जो पर्यावरण को नष्ट करने का काम करते हैं।कहीं न कहीं हमे त्वरित गति से कदम उठाने की आवश्यकता है।

सुरेश शर्मा
(प्रधान संपादक)

ओलावृष्टि प्रभावित किसानों से न...

(पृष्ठ १ का शेष...)

जबकि दूसरे चरण में ८५९ करोड़ रुपए की मदद राशि सीधे उनके खातों में जमा की गई है। जिन किसानों के पास खाता नहीं है, उनको उचित सहयोग प्रदान करने कलेक्टर को निर्देश दिए गए हैं। याचिकाकर्ता के वकील आशीष गायकवाड़ ने कहा कि ओलावृष्टि के चलते आत्महत्या करने वाले ७७ किसानों के मामलों की राज्य सरकार ने पूरी तरह से अनदेखी की है। ऐसे किसानों तक अब तक मदद राशि नहीं पहुंची है। कोर्ट के आदेश के बावजूद पुणे के एक बैंक ने कर्ज की राशि वापस करने के लिए किसान पर दबाव बनाया है। इस पर खंडपीठ ने गायकवाड़ को अगली सुनवाई के दौरान इस संबंध में न्यायालय की अवमानना से जुड़ा आवेदन दायर करने को कहा

बहुउपयोगी वृक्ष सेंजना लगाएं

डॉ. पंकज शर्मा
प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र, बानसूर (अलवर)

विभिन्न परिस्थितियों की दृष्टि से सेंजना बहुत ही उपयुक्त वृक्ष है। जड़ से बीज तक इस वृक्ष के सभी अंग किसी न किसी रूप में मानवीय उपयोग में आते है। सेंजना को वनस्पति शास्त्र में 'मोरिंगा ओलीफेरू' कहते है। प्रचलित एवं व्यावहारिक अंग्रेजी भाषा में इसे ''बेन आयल ट्री'' अथवा ''होर्स रेडिहीट्री'' के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय उप महाद्वीप में उत्पन्न प्रजाति का वृक्ष होने से स्थानीय बोलियों एवं भाषाओं में इसके अलग–अलग नाम है। राजस्थान में इसे सेंजना, सहजना एवं हिन्दी में संजना,संस्कृत में शोभानजनां, पंजाबी में शुभांजना, बंगाली में सजीना, तेलगु में सेगन और मराठी में शेरगी कहा जाता है।

उत्तर हिमालय की तराई वाले क्षेत्र से दक्षिण में केरल तक, पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में असम तक सेंजना का वृक्ष पाया जाता है। देश के उत्तरी–पश्चिमी भाग का यह मूल वृक्ष है। नदियों के मुहानों एवं बहाकर लाई हुई मिटटी वाले क्षेत्रों में यह प्राकृतिक रूप में पाया जाता है। वैसे चिकनी, भारी कंकरीली एवं पथरीली मिटटी के अलावा सभी प्रकार की मिटटी में यह वृक्ष पनप सकता है। परन्तु रेतीली एवं हल्की दोमट मिटटी इसके लिए सर्वोत्तम है।

भूमि तथा जलवायु : सहजन के लिए कोई विशेष मृदा की आवश्यकता नही होती है। यह लगभग सभी प्रकार की मृदा में उगाया जा सकता है। लेकिन बालू मिटटी लाल मिटटी तथा काली मिटटी में इसकी अच्छी वृद्धि होती है। मृदा का पी.एच. 6 से 7.5 के बीच अच्छा रहता है। यह सभी प्रकार की जलवायु के अनुकूल है। लेकिन गर्म जलवायु में इसकी पैदावार अच्छी मिलती है। उत्तर भारत में सेंजना की केवल एक फसल (अप्रेल–मई) होती है। जबकि दक्षिण भारत में इसकी दो फसल प्राप्त होती है।

सहजन की दो प्रकार की किस्में होती है एक वर्षीय एवं बहुवर्षीय। इसकी स्थानीय किस्में क्षेत्रवार उपलब्ध है। दक्षिण भारत में इसकी एक वर्षीय कम ऊंचाई वाली किस्म भी प्रचलित है। इन किस्मों से बिना कटाई छंटाई सीधे फलियों की तुड़ाई की जाती है। इसकी कुछ प्रमुख किस्में जाफना, पूना , मूरिंगाई, कट्टू मुरिंगाई, चवकाचेरी मूरिंगाई, पाल मुरिंगाई, कोडिगल मूरिंगाई, पी.के.एम–1, सी.ओ.

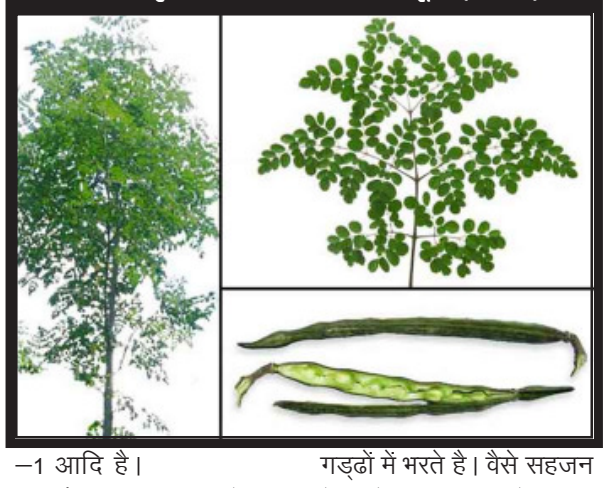

–1 आदि है।

पौध संरक्षण : सेंजना उन कुछ ही गिनी–चुनी प्रजातियों में से एक है, जिसकी चार मीटर लम्बी शाखा की कटिंग लगाई जावे तो रोपित करने के एक वर्ष में ही पत्ते, फूल एवं फल देकर यह लाभ पहुंचाने लगता है। गन्दी बस्तियों में जहां संरक्षण के अभाव में दूसरी प्रजातियों के वृक्ष लगाना आसान नही हो, वहां 10 से 15 सेमी. मोटे व्यास वाली तथा 4 मीटर लम्बी टहनियों की कटिंग रोपित की जा सकती है।

खाद एवं उर्वरक : रोपण से पूर्व गड्ढों में 5 किग्रा. गोबर की खाद को 10 ग्राम कार्बोयूरान या मिथाइल पैराथियान के साथ मिलाकर गड्ढों में भरते है। वैसे सहजन में विशेष खाद एवं देखभाल की आवश्यकता नही रहती। लेकिन अच्छे उत्पादन के लिए 250 ग्राम नाइट्रोजन, 125 ग्राम फॉस्फोरस तथा 125 ग्राम पोटाश प्रति पौधा वर्ष में दो बार मई–जून एवं जनवरी – फरवरी में देने से पौधों से फलियों की अच्छी उपज प्राप्त होती है।

देखभाल : सहजन में देखभाल की बहुत कम आवश्यकता रहती है। अच्छी फसल के लिए सर्दी में 15–20 दिन के अन्तर पर तथा गर्मी में 7–10 दिन में अंतर पर पानी देते रहना चाहिए। अप्रैल माह में फलियों को तोड़ने के बाद 30–45 सेमी. छोड़कर सभी मुख्य शाखायें काट देनी चाहिए जिससे उनमें नए फुटाव निकल कर अगले वर्ष अच्छी फसल मिल सके। सहजन को फसल सुरक्षा की कोई विशेष आवश्यकता नही रहती है।

सेंजना की जड़, तना, टहनियां, पत्ते, फूल–फल एवं बीज, सभी किसी न किसी प्रकार उपयोग में आते है। इसके पत्तों एवं टहनियों की प्रति वर्ष कटाई–छंटाई करके चारा और ईंधन के लिए लकड़ी प्राप्त की जा सकती है। वृक्ष की पत्तियों में विटामिन 'ए' एवं 'सी' केरोटिन और एसकोरबिक एसिड के रूप में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जो पशुओं के लिए एक पौष्टिक आहार (चारा) है। विशेषतः ऊंट इसे अधिक चाव से खाते है। शाखाएं एवं पत्तियाँ छँटाई करके अच्छे चारे के रूप में काम ली जाती है। मोटी लकड़ी कागज बनाने की लुगदी लिए उपयुक्त है।

सेंजना के कोमल फूल एवं पत्तियां खाने के काम में लिये जाते है, फूल की सब्जी एवं रायता बनाया जाता है। सेंजना की पत्तियां भी सब्जी, आचार एवं व्यंजन बनाने में काम में ली जाती है। बीज तलने पर खाने के काम आते है, जिनका स्वाद मटर जैसा होता है। बीजों से निकलने वाला तेल पारदर्शी होता है। जो छोटी मशीनों के पूर्जो में चिकनाई देने तथा सौन्दर्य प्रसाधन बनानें में काम आता है। बीज से तेल निकालने के बाद उसकी खली एक अच्छी खाद का काम देती है, वृक्ष की छाल से प्राप्त गोंद का उपयोग कपड़े की छपाई एवं पेन्ट बनाने में किया जा सकता है।

सैंजना औषधि के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण प्रजाति है। विभिन्न प्रकार की बीमारियों में विविध रूप में इसका उपयोग होता है। कोमल पत्ते रक्त रोग में दिये जाते है, पत्तों का रस बच्चों के दस्त एवं उल्टियां रोकने में काम आता है। ताजा पत्तों का लेप फोड़े फुन्सियों पर लगाया जाता है। ये नारू या बाला–कीड़े को भी निकालने के काम आता है। तने की छाल उत्तेजक एवं रक्तातिसार अवरोधक है। दमा, खांसी, पुराने गठिया रोग में भी इनका प्रयोग होता है।

सहजन की पत्तियों का उपयोग चर्म रोगों एवं पेट के कीड़ों के उपचार में किया जाता है। इसकी फलियों एवं पत्तियों में मलेरिया एवं कैंसर रोधी गुण पाये जाते है। इसके बीज से बना पाउडर सांभर, सूप बनाने एवं पानी को साफ करने में प्रयोग किया जाता है।

प्राचीन कृषि का इतिहास एवं पारम्परिक संरक्षण के तरीके

शिक्षा निदेशालय, म.प्र. कृ.प्रौ.वि.वि., उदयपुर (राजस्थान)
❖ डॉ. पीयूष प्रसाद जानी, सह प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय, म.प्र. कृ.प्रौ.वि.वि., उदयपुर (राजस्थान)

दुग्ध महत्वपूर्ण आहार है उसी तरह पौधों के लिये सही प्रकार से बनी गोबर की खाद सम्पूर्ण आहार है।

हरित क्रांति के पश्चात् दो दशकों में कृषि उत्पादकता में कोई महत्वपूर्ण

डॉ. लतिका व्यास व डॉ. पीयूष जानी

भारत एक कृषि प्रधान देश है। किसी भी देश के आर्थिक विकास में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। हमारे देश में प्राचीनतम समय से कृषि की जा रही है। हमारे पूर्वजों के पास कृषि का महत्वपूर्ण ज्ञान था, लेकिन समयानुसार हम अपनी प्राचीन कृषि को भूलकर नई पद्धतियों को अपनाने में लग गये। इसके परिणाम से हमारी भूमि दिनों दिन खराब होती जा रही है। आज हमें आवश्यकता है कि पूर्वजों के द्वारा दिये गये कृषि ज्ञान को अपनाकर बेकार होती जा रही कृषि योग्य भूमि को बचाया जा सके।

भारत में खेती हजारों वर्षों से की जा रही है। जब कि यूरोप का अस्तित्व ही नहीं था। हमारे ऋषियों ने अपने विवेक, ज्ञान और परिणाम से कृषि समस्याओं का हल जैविक विधि सें निकाला था, चूँकि ये ऋषि आश्रमों में प्रकृति के बीच, पशु, पक्षीयों, पौधों, वनों, वृक्षों, झरनों ओदि से घीरे रहते थे उनको इन सबके बारे में अति सूक्ष्म ज्ञान ही नहीं वरन् उनसे प्रेम भी था और उनका महत्व भी जानते थे ऋषि मनु ने कहा था कि जो मनुष्य बेकार बीज को सही बताकर बेचता है उसे सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिये। आज हम पश्चिमी कृषि से प्रभावित होकर पूर्वजों के ज्ञान को भूला चुके हैं। आज जब पश्चिमी देशों ने कार्बनिक खेती की बात की तो सबका ध्यान गोबर की खाद की ओर गया। जबकि हमारे महर्षि अर्थ शास्त्री कौटिल्य ने ईसा से 400 वर्ष पूर्व ही खेत में गोबर की खाद काम में लेने पर जोर दिया था। जिस तरह एक शिशु के लिये

❖ डॉ. लतिका व्यास, सह प्राध्यापक (गृहविज्ञान), प्रसार

नाम से सम्मान करना चाहिये। यह समय हमारी कृषि विरासत का अध्ययन करने का है हमारे देश के प्राचीन एवं मध्य युगीय काल के साहित्य में पर्यावरण संसाधनों और आध्यात्मिकता का समावेश है। दन साहित्यों के गंभीरतापूर्वक अध्ययन तथा वर्णित ज्ञान को पुनः अंगीकार करने की आवश्यकता है जिससे समाज का पुनःर्निमाण किया जा सके व कृषकों का मनोबल बढ़ाया जा सके।

हमारे पुराने साहित्यों में लिखा है –

खोज नहीं हुई जिससे बढ़ती हुई आबादी के लिये खाद्य आपूर्ति व आज की योजनाओं जैसे "राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन" हेतु खाद्य आपूर्ति की जा सके। इस संदर्भ में हमारी कृषि विरासत को जानना आवश्यक है। भारतीय कृषि जैमिनी पाराशर एवं कश्यप ने यह रास्ता दिखलाया जिससे बेहतर व टिकाऊ कृषि, वृक्ष, पर्यावरण, जंगल, जल, जमीन व पशुओं को सम्मान देते हुए इनमें संतुलन रखा जा सके। उन्होंन कहा कि धनवान, जवाहरात, गहने, अच्छी पौशाकें है। उन्हें भी किसानों से ऐसी याचना करनी चाहिये जैसे भक्त भगवान से करता है व "अन्नदाता"

- खेत जोतने के लिये माह का 2,3,5,7,10,11 व 13 वां दिन अच्छा माना जाता है। 4 वें दिन कीटों का नुकसान का डर रहता है। शनिवार को बुवाई से कीड़ों व टिड्डों का डर रहता है।
- खाद बनाने के लिये गोबर को सुखाकर पाऊडर बनाकर सड़ने के लिये खड्डे में डालना चाहिये, जिससे गोबर जल्दी सड़ता है और गोबर में उपस्थित सभी खरपतवार के बीज भी नष्ट हो जाते है।
- यदि खेत की जुताई गहरी की जावे व मिट्टी को इतना सुखने देवें कि वजन का एक चौथाई रह जावे तो खाद देना भी आवश्यक नहीं होता। . ..... आदि।

कनुपजल :

वैसे तो भारत वर्ष में खेती का प्रयोग हजारों वर्षों से चल रहा है। कनुपजल एक द्रवीय जैविक खाद है जिसका उल्लेख सुरपाल के वृक्षायुर्वेद में मिलता है। पशुओं और पौधों के अवशेषों को विभिन्न मात्राओं के अनुसार मिश्रण बनाकर कुछ समय खमीर उठाने की प्रक्रिया की जाती है। उपवनविनोद एवंविश्ववल्लभ में इसका वर्णन मिलता है। उसका उपयोग कई फसलों में किया गया है जिनके अच्छे परिणाम भी मिले हैं। कनुपजल पौधों को न केवल पोषण देता है बल्कि व्याधियों से भी बचाता है।

प्राचीन भारत से अपनाए जा रहे कृषि उत्पाद संरक्षण के तरीके आज भी प्रचलित है यह सभी पर्यावरण रक्षित होने के साथ–साथ स्वास्थ्य परक भी है।

अ. नमक द्वारा : साधारण खाने के काम में आने वाले नमक को खाद्य पदार्थों के सुरक्षित भण्डारण हेतु काम में लिया जाता है। इसके लिये 200 ग्राम प्रति किलो खाद्य पदार्थ की दर से मिलाया जाता है। जिससे खाद्य पदार्थ खराब होने से बच जाता है। इसके द्वारा लाल दाल, मसूर दाल, लाल मिर्च पाऊडर, इमली आदि को संरक्षित किया जाता है।

ब. नीम या तुम्बाई की पत्तियों द्वारा : रागी अनाज को आज भी नीम की या तुम्बाई की सूखी पत्तियों द्वारा संरक्षित किया जाता है। तीखी गंध होने की वजह से इन पत्तियों से कीड़े–मकोड़े दूर रहते हैं और अनाज सुरक्षित रहता है।

स. निम्बोली के घोल द्वारा : जिन भी बोरियों में अनाज को भरकर सुरक्षित रखना है उन्हें पहले निम्बोली के घोल द्वारा धो लिया जाता है। इसके लिये निम्बोलियों को पीसकर उसका रस निकाल लें या इसका 10 किलोग्राम पाऊडर 100 लीटर पानी में 24 घण्टे भिगोकर रखें फिर बोरियों में अनाज को भरकर रखने से लम्बे समय तक सुरक्षित रहता है।

द. नीम तेल द्वारा : अनाज व दालों में 20 मिलीलीटर नीम तेल को प्रति किलो अनाज की दर से मिलाने से अनाज एक वर्ष तक खराब नहीं होता है। नीम तेल अनाज को कीड़ों के प्रकोप से बचाता है।

य. अरण्डी के तेल द्वारा : अनाज व दालों में अरण्डी के तेल को मिलाकर रखने से भी अनाज को सुरक्षित रखा जा सकता है। काम में लेने से पहले चावल व दालों को गर्म पानी से 2–3 बार धोकर ही काम में लेना चाहिये।

र. कपूर द्वारा : अनाज व दालों को कीड़ो से बचाने के लिये यदि एक ग्राम कपूर का टुकड़ा प्रति 5 किलोग्राम अनाज की दर से डिब्बों में रख दिया जाये तो अनाज कम से कम तीन महिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है। ज्यादा समय तक सुरक्षित रखने के लिये इस क्रिया काक दोबारा व तिबारा भी अपनाया जा सकता है। दुबारा उपयोग सेपहले एक बार अनाज को धूप में सुखा लेना चाहिये ताकि उसे पूरी तरह से सुरक्षित रखा जा सके।

ल. नींबू द्वारा : दालों को सुरक्षित रखने के लिये नींबू को सुखाकर उसका पाऊडर भण्डारण में काम मे लेना चाहिये। 10 ग्राम नींबू का पाऊडर प्रति एक किलो दाल के हिसाब से प्रयोग में लिया जाता है। नींबू की अम्लीय प्रवृति होने की की वजह से इसके सम्पर्क में कीड़े–मकोड़े एवं फफूंदी नहीं आती है। यह कीड़े–मकोड़े के शरीर पर जलन पैदा कर देता है अतः वे इससे दूर रहते हैं। इसके प्रयोग से अनाज को एक वर्ष तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

व. राख द्वारा : ज्वार, चावल, जौ, बाजरा आदि के दानों में राख मिलाकर रखने से वह लम्बे समय तक सुरक्षित रहते है। साथ ही राख लहसुन को सुरक्षित रखने के भी काम में आती है।

ह. भण्डारों द्वारा : गांवों में कई तरह के भण्डारों द्वारा अनाजो को सुरक्षित रखा जाता है। यदि मिट्टी से बने भण्डारों को भेड़ की मींगणियों को मिट्टी मे मिलाकर लीपने से भी भण्डार गृह एवं अनाज को सुरक्षा मिलती है।

अतः आज की महत्ती आवश्यकता है कि हजारों वर्षो से चली आ रही व कृषि अनुसंधानों के आधार पर किये गये तथ्यों को फिर से अंगीकार कर खाद्य आपूर्ति, टिकाऊ खेती व खाद्य सुरक्षा की ओर से कदम बढ़ावें।

खराब मौसम से किसान के साथ सरकार भी चिंतित

नई दिल्ली... खाद्यान्न के रिकॉर्ड उत्पादन अनुमान में भी इस वजह से आ सकती है गिरावट 26.32 करोड़ टन खाद्यान्न उत्पादन का अनुमान है इस बार 25.71करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ था 2012-13 में 956 लाख टन गेहूं उत्पादन का अनुमान है इस बार देश में 925 लाख टन गेहूं का उत्पादन हुआ था वर्ष 2012-13 में बे-मौसम बारिश के साथ ही आंधी ने किसानों के साथ-साथ सरकार की पेशानी भी बढ़ा दी है। बार-बार खराब होते मौसम से जहां खाद्यान्न के रिकॉर्ड उत्पादन अनुमान 26.32 करोड़ टन में भी कमी आने की आशंका पैदा हो गई है। खराब मौसम से गेहूं और आम की फसल को सबसे ज्यादा नुकसान होने की आशंका है। मौसम विभाग के अनुसार पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता के कारण बार-बार मौसम खराब हो रहा है तथा शनिवार तक बारिश के साथ ही बादल छाए रहने की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार आंधी की वजह कहीं हवा का दबाव कम तो कहीं ज्यादा होना है। खाद्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि बारिश से मंडियों में रखे गेहूं की क्वालिटी प्रभावित होने की आशंका बढ़ गई है। गेहूं की सरकारी खरीद में भी खराब मौसम के कारण तेजी नहीं आ रही है। चालू रबी विपणन सीजन में अभी तक

40 लाख टन गेहूं की ही न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीद हो पाई है। प्रमुख उत्पादक राज्यों हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में गेहूं की कटाई के लिए तैयार है लेकिन आंधी के साथ ही बारिश होने से जहां कटाई बाधित हो रही है, वहीं कटाई हो चुकी फसल की थ्रेसिंग भी नहीं हो पा रही है। सोनीपत जिले के कुमासपुर गांव के किसान कृष्ण आंतिल ने बताया कि उनकी 4 एकड़ में गेहूं की फसल कट चुकी है, लेकिन पिछले दो दिनों से रुक-रुक हो रही बारिश से थ्रेसिंग नहीं हो पा रही है। पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में पिछले दो-तीन दिनों में बारिश हुई है साथ ही हिमाचल और उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी और बारिश से अचानक मौसम में ठंड लौट आई है। बुधवार और शुक्रवार को सुबह-सुबह पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में बारिश के साथ आंधी चलने से गेहूं की खड़ी फसल खेतों में बिछ गई है, जबकि मंडियों में पड़ा लाखों क्विंटल गेहूं भीग गया है। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के किसान जितेंद्र मलिक ने बताया कि पिछले दो दिनों से बारिश के साथ ही आंधी से गेहूं के साथ ही आम की फसल को नुकसान हुआ है। आंधी से आम की फसल को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। कृषि मंत्रालय ने दूसरे आरंभिक अनुमान में वर्ष 2013-14 में देश में खाद्यान्न का रिकार्ड उत्पादन 26.32 करोड़ टन होने का अनुमान है, जबकि वर्ष 2012-13 में 25.71 करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ था। मंत्रालय ने चालू रबी में गेहूं के रिकॉर्ड उत्पादन अनुमान 956 लाख टन होने का अनुमान लगाया है, जबकि वर्ष 2012-13 में 925 लाख टन गेहूं का उत्पादन हुआ था।

इस साल सामान्य से कम हो सकती है बारिश

नई दिल्ली : इस साल देश में सामान्य से कम बारिश हो सकती है। सूत्रों के मुताबिक भारतीय मौसम विभाग ने दुनिया की दूसरी एजेंसियों के अनुमान पर सहमति जता दी है। भारतीय मौसम विभाग के मुताबिक जून में मॉनसून के आगमन में कुछ देरी हो सकती है। इस वजह से पूरे मॉनसून सीजन में सामान्य से कम बारिश होने की आशंका है। हालांकि मौसम विभाग के सूत्रों का ये भी कहना है कि जुलाई के दौरान देश में अच्छी बारिश होने की संभावना दिख रही है। लेकिन फिर अगस्त और सितंबर के दौरान मॉनसून कमजोर पड़ सकता है। आपको बता दें कि मौसम विभाग ने अभी तक आधिकारिक तौर पर अनुमान जारी नहीं किया है। माना ये जा रहा है कि अगले हफ्ते तक भारतीय मौसम विभाग का पहला अनुमान जारी हो सकता है। मई के बाद सोयाबीन, कपास और ग्वार की बुआई शुरू होती है लेकिन अगर मॉनसून में देरी होती है तो इन फसलों पर असर दिख सकता है। वहीं इस खबर के बाद वायदा बाजार में जीरे का भाव करीब 2 फीसदी उछलकर 10,500 रुपये के करीब पहुंच गया है। साथ ही एनसीडीईएक्स पर हल्दी 0.5 फीसदी से ज्यादा चढ़कर 7,020 रुपये पर पहुंच गई है।

एक्सपोर्ट डिमांड अच्छी होने की वजह से जीरे को सपोर्ट मिल रहा है। गुजरात में बिन मौसम बरसात की वजह से भी जीरा के भाव को सहारा मिला है। हालांकि बाजार में जीरे की आवक अच्छी है, साथ उत्पादन भी ज्यादा होने का अनुमान है।

अप्रैल-मई में चीनी निर्यात सब्सिडी होगी 3,300 रुपये

नई दिल्ली... सरकार ने अप्रैल मई की अवधि के लिए कच्ची चीनी की खेप के लिए 3,300 रुपये प्रति टन की निर्यात सब्सिडी जारी रखने का फैसला किया है। फरवरी अंत में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने गन्ना किसानों के बकाये का भुगतान करने के लिए नकदी संकट से जूझ रहे चीनी उद्योग को मदद देने के मकसद से दो साल के लिए 40 लाख टन कच्ची चीनी का निर्यात करने के लिए प्रोत्साहन को मंजूरी दी थी। फरवरी-मार्च के लिए 3,300 रुपये की निर्यात सब्सिडी तय की गई थी। सीसीईए ने हर दो महीने पर सब्सिडी की मात्रा की समीक्षा करने का फैसला किया

था, जो रुपये-डॉलर की विनिमय दर पर निर्भर करेगा। सरकारी सूत्रों ने कहा, 'खाद्य मंत्रालय ने पिछले सप्ताह सब्सिडी की मात्रा की समीक्षा की थी और अप्रैल मई की अवधि के लिए भी इसे 3,300 रुपये पर बनाए रखने का फैसला किया है। इस बारे में अधिसूचना जल्द जारी की जाएगी। भारतीय चीनी मिल संघ (इस्मा) के अनुसार अप्रैल और मई के दौरान कम से कम 4 लाख टन चीनी के निर्यात की संभावना है। निर्यात की कुछ खेप को पहले ही भेजा जा चुका है। इस्मा के ताजे आंकड़ों के अनुसार अक्टूबर में शुरू हुए चालू विपणन वर्ष के पहले छह महीनों में कच्ची और रिफाइंड दोनों रूप में ही 14.5 लाख टन चीनी का निर्यात किए जाने का अनुमान है। इसमें से 3,50,000 टन चीनी का पिछले महीने निर्यात किया गया, जो सब्सिडी का पहला महीना था। विपणन वर्ष 2013-14 में 15 अप्रैल तक देश का चीनी उत्पादन 4 फीसदी घटकर 2 करोड़ 31 लाख टन रह गया, जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 2 करोड़ 41.5 लाख टन था। चीनी उत्पादन में महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में गिरावट आई, जो देश में चीनी के दो शीर्ष उत्पादक राज्य हैं।

रॉ शुगर निर्यात पर इंसेंटिव में संशोधन लेट होने की आशंका

नई दिल्ली मिलों की कठिनाई अप्रैल से एक्सपोर्ट इंसेंटिव में संशोधन होना था लेकिन अभी तक सीसीईए की बैठक भी तय नहीं 3,333 रुपये प्रति टन सब्सिडी रॉ शुगर निर्यात पर सब्सिडी न बढ? से निर्यात के नए सौदे नहीं रॉ-शुगर के निर्यात पर चीनी मिलों को दिए जा इंसेंटिव में संशोधन करने पर फैसला आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति करेगी। हालांकि चीनी का चालू पेराई सीजन समाप्ति की और है जबकि अभी तक सीसीईए की बैठक के लिए तारीख भी तय नहीं हुई है। ऐसे में रॉ-शुगर पर इंसेंटिव में संशोधन के फैसले के लिए चीनी मिलों का इंतजार और लंबा हो सकता है। खाद्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बिजनेस भास्कर को बताया कि चीनी मिलों को रॉ-शुगर के निर्यात पर दिए जा रहे इंसेंटिव को रिवाइज करने से सब्सिडी का बोझ तय अनुमान से बढ़ रहा है, इसलिए मंत्रालय ने इंसेंटिव रिवाइज करने की फाइल को सीसीईए के पास भेज दिया है, इसीलिए इस पर फैसला अब सीसीईए की बैठक में होगा। केंद्र सरकार ने फरवरी महीने में चीनी मिलों को रॉ-शुगर के निर्यात पर 3,333 रुपये प्रति टन की दर से सब्सिडी देने की मंजूरी दी थी, साथ ही इस स्कीम को दो महीने बाद रिवाइज करना था। इसलिए अप्रैल महीने से इस स्कीम को रिवाइज करना था लेकिन डॉलर के मुकाबले रुपये में आई मजबूती से इंसेंटिव का बोझ पिछले अनुमान से बढ़ गया है। फरवरी महीने में केंद्र सरकार ने चीनी मिलों को 40 लाख टन रॉ-शुगर के निर्यात पर इंसेंटिव देने की योजना को मंजूरी दी थी। इसके तहत चालू पेराई सीजन और अगले पेराई सीजन में 20-20 लाख टन रॉ-शुगर के निर्यात पर इंसेंटिव दिया जाना है। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) के महानिदेशक अविनाश वर्मा ने बताया कि चीनी का चालू पेराई सीजन समाप्ति की ओर है, साथ ही घरेलू बाजार में चीनी की दाम बढ? के साथ ही विश्व बाजार में दाम घटने से रॉ-शुगर के निर्यात पड़ते नहीं लग रहे हैं। सरकार को रॉ-शुगर पर इंसेंटिव को पहली अप्रैल से रिवाइज करना था लेकिन आधा महीना बीतने के बावजूद भी अभी तक इस पर फैसला नहीं हुआ है जोकि उद्योग के लिए चिंताजनक है। इस समय विश्व बाजार में रॉ-शुगर के दाम 16.68 सेंट प्रति पाउंड है जबकि घरेलू बाजार में चीनी की मौजूदा कीमतों के आधार पर विश्व बाजार में दाम 18.50 सेंट प्रति पाउंड से ऊपर हों, तभी निर्यात पड़ते लग सकते हैं। वैसे भी फरवरी महीने में रुपये के मुकाबले डॉलर 62.44 के स्तर पर था जबकि इस समय 60 के आसपास चल रहा है। उन्होंने बताया कि पहली अप्रैल से शुरू हुए चालू पेराई सीजन में अभी तक केवल 14.5 लाख टन चीनी (6.5 लाख टन व्हाइट और 8 लाख टन रॉ-शुगर) के निर्यात सौदे हुए हैं। चालू चीनी पेराई सीजन समाप्ति की ओर है इसलिए रॉ-शुगर का ज्यादा निर्यात होने की संभावना कम है। घरेलू बाजार में चीनी की कीमतों में 300-400 रुपये की तेजी आकर उत्तर प्रदेश में चीनी की एक्स-फैक्ट्री कीमतें 3,200 से 3,300 रुपये और दिल्ली में थोक कीमतें 3,350-3,400 रुपये प्रति क्विंटल हैं। इस्मा के अनुसार चालू पेराई सीजन में चीनी का कुल उत्पादन 5 फीसदी घटकर 238 लाख टन होने का अनुमान है जबकि पिछले पेराई सीजन में 251 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था।

अप्रैल की बारिश से वनोपज फसलों को भारी नुकसान

छत्तीसगढ़ में इस साल की शुरुआत से मौसम की बदलती चाल फसलों को प्रभावित कर रही है। फरवरी मार्च में हुई जोरदार बारिश के बाद एक बार फिर अप्रैल की बारिश ने किसानों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। इस बार मौसम की मार तैयार खड़ी रबी फसलों और जंगलों में मौजूद वनोपज पर पड़ा है। संग्राहकों के मुताबिक इस बार साल बीज की ५० फीसदी तक फसल बरबाद हुई है।

कृषि विभाग के एक विकास अधिकारी ने बताया कि इस साल फसलों के लिए मौसम बेहद खराब रहा है। हर महीने कभी धीमी और कभी चक्रवाती बारिश ने खड़ी फसलों को बरबाद किया है। मार्च में ओलों के कारण काफी फसल बरबाद हुई थी। वहीं अप्रैल के दूसरे सप्ताह के बाद हुई चक्रवाती बारिश और तूफानी हवाओं ने फसलों को काफी नुकसान पहुंचाया है।

मार्च-अप्रैल का महीना वनोपज के संग्रहण के लिए बेहद महत्वपूर्ण होता है। सर्दियों में शुरुआत के बाद इमली और महुआ का संग्रहण अभी चल रहा है। वहीं अप्रैल मई से साल बीजों का संग्रहण शुरू होता है। संग्राहक जंगलों में जाकर इन्हीं बीजों को लाकर कारोबारियों एवं सरकारी एजेंटों को बेचते हैं। लेकिन इस बार बारिश और तूफान ने वनोपज का कारोबार प्रभावित किया है। पिछले कुछ दिनों में अलग-अलग इलाकों में आए अंधड़-पानी ने साल बीज को इस बार काफी क्षति पहुंचाई है। संग्राहकों के अनुसार इस साल करीब ५० फीसदी साल बीज खराब हो गया है। वनोपज के अलावा गेहूं की फसल बड़े पैमाने पर प्रभावित हुई। सबसे अधिक नुकसान दक्षिणी छत्तीसगढ़ के बस्तर जगदलपुर क्षेत्र में हुआ है। वहीं मैदानी क्षेत्रों में भी आंधी बारिश से फसलें बरबाद हुई है।

सोयाबीन और ग्वार पर कमजोर मानसून का असर

नई दिल्ली : मानसून विभाग ने रिपोर्ट जारी करके मानसून के कमजोर रहने का अंदेशा जताया है। इसके चलते मुख्य प्रभावित होने वाले राज्यों में पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और हरियाणा हैं। कमोडिटी बाजार के लिहाज से कल ग्वार, सोयाबीन, चीनी के भाव महत्वपूर्ण रह सकते हैं।

धान, ग्वार, सोयाबीन, चीनी जैसी कमोडिटीज पर इस कमजोर बारिश का सबसे अधिक असर पड़ेगा। कमोडिटी बाजार में ट्रेड करने के लिहाज से ट्रेडर्स को ग्वार, चीनी और सोयाबीन जैसी कमोडिटी पर नजर रखनी चाहिए। इनमें आने वाले दिनों में इनमें अच्छी तेजी देखने को मिल सकती है। गौरतलब है कि धान का वायदा फिलहाल भारत के एक्सचेंजों में ट्रेड नहीं होता है।

मौसम विभाग के जानकारों के मुताबिक भारत का पश्चिम-उत्तरी हिस्सा (पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गोवा) इससे सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे, जबकि दक्षिण भारत में मानसून सामान्य रहेगा और पश्चिमी भारत के कुछ इलाकों में कम बारिश की संभावना है। ध्यान देने वाली बात है कि ग्वार, सरसो, धनिया आदि महत्वपूर्ण कमोडिटी इन्हीं हिस्सों से आती है। आम आदमी के लिहाज से यह बात ध्यान देने वाली है कि आने वाले दिनों में चीनी, सोयाबीन जैसी कमोडिटीज में तेजी देखने को मिल सकती है।

धान और कॉटन की MSP में 50 रुपए प्रति क्विंटल की बढ़ोत्तरी

नई दिल्ली एग्रिकल्चर मिनिस्ट्री ने धान की मिनिमम सेलिंग प्राइस (एमएसपी) में 50 रुपए की बढ़ोत्तरी कर दी है, जिसके बाद अब इसकी कीमत कॉमन वैराएटी के लिए 1360 रुपए प्रति क्विंटल हो जाएगी और ग्रेड ए वैराएटी के धान की एमएसपी में 55 रुपए की बढ़ोत्तरी कर दी गई है, जिसके बाद इसकी कीमत 2014-15 के लिए 1400 रुपए प्रति क्विंटल हो जाएगी।

मिनिस्ट्री ने कॉटन की एमएसपी में भी 50 रुपए प्रति क्विंटल की बढ़ोत्तरी कर दी है, जिसके बाद इसकी कीमत मीडियम स्टेपल के लिए 3750 रुपए प्रति क्विंटल और लॉन्ग स्टेपल के लिए 4050 रुपए प्रति क्विंटल हो जाएगी। मिनिस्ट्री ने 12 अन्य खरीफ फसलों की एमएसपी को लेकर सुझाव दिए गए हैं, जिन्हें सरकार की संवैधानिक इकाई कमीशन फॉर एग्रिकल्चर कॉस्ट्स एंड प्राइसेस (CACP) के द्वारा बनाया गया है। मिनिस्ट्री ने मक्के की एमएसपी में भी 30 रुपए की बढ़ोत्तरी कर दी है, जिसके बाद अब इसकी कीमत 1530 रुपए प्रति क्विंटल हो जाएगी और हाइब्रिड वैराएटी के लिए इसकी कीमत 1550 रुपए प्रति क्विंटल हो जाएगी।

इंडिया रेटिंग ने कपास उत्पादन अनुमान बढ़ाया

नई दिल्ली... इंडिया रेटिंग ने चालू वित्त वर्ष के लिए कपास क्षेत्र के लिए उत्पादन अनुमान को बढ़ाया है और इसे 'नकारात्मक' से बढ़ाकर 'नकारात्मक से स्थिर' किया है। एजेंसी ने कपास कंपनियों के रेटिंग को भी इस वर्ष संशोधित कर 'नकारात्मक' से 'स्थिर' किया है। इसका कारण निर्यात के लिए घरेलू यार्न उत्पादन बढने और सरकार की अनुकूल नीतियां हैं जिसने ऊंचे स्तर पर कपास कीमतों को स्थिर बनाने में मदद मिली है। एजेंसी ने कहा कि चालू वित्तवर्ष में कपास की कीमतें मौजूदा स्तर पर स्थिर रहने की संभावना है। इसके अलावा पाकिस्तान, बांग्लादेश, तुर्की और वियतनाम से मांग में तेजी के कारण चीन की कम मांग की भरपाई होने की संभावना है। इसके अलावा एजेंसी ने सूचित किया है कि पिछले वर्ष अप्रैल-नवंबर में घरेलू उत्पादन की स्थिति में जो सुधार था, वह इस वर्ष भी जारी रहेगा। कपास निगम को उम्मीद है कि घरेलू कपास का उत्पादन दशक के उच्च स्तर यानी 3.75 करोड़ गांठ रहेगा, जिसका कारण अनुकूल मॉनसून और खेती के अधिक रकबे का होना है। हालांकि रेटिंग एजेंसी ने कहा है कि जनवरी 2014 में प्रतिकूल मौसम के कारण चालू विपणन वर्ष (अक्टूबर-सितंबर) में उत्पादन कम रहेगा।

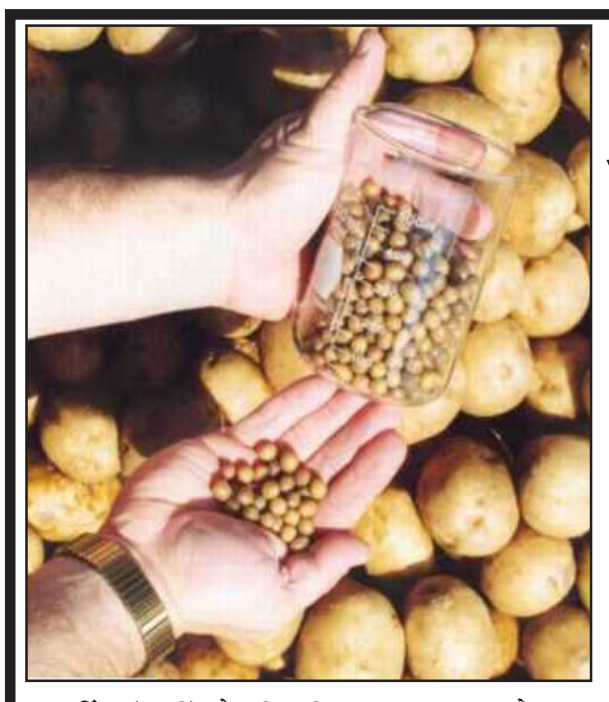

आलू के बीज के लिए हॉलैंड से संधि- महिंद्रा

महिंद्रा एंड महिंद्रा के कृषि प्रभाग भारतीय किसानों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले आलू के बीज की खरीद के लिए हॉलैंड के आधार पर बीज कंपनी HZPC के साथ एक संयुक्त उद्यम में प्रवेश किया है.

100 वर्षीय HZPC बीज आलू और व्यापार बढ़ रहा है, आलू प्रजनन में है. महिंद्रा संयुक्त उद्यम में 60 फीसदी का आयोजन करेगा.

नई कंपनी टिशू कल्चर पौधों और मिनी कंद का उत्पादन करने के लिए एक आधुनिक सुविधा का निर्माण करने की योजना है. सुविधा का उद्देश्य किसानों को उच्च गुणवत्ता मिनी कंद और जल्दी पीढ़ी बीज आलू की पेशकश है. कंपनी 'हिमाचल प्रदेश' में पालमपुर में अपनी सुविधा में उत्पादित कर रहे हैं, जो उच्च गुणवत्ता मिनी कंद के साथ किसानों को आपूर्ति करती है. महिंद्रा एक न्यूनतम गारंटी मूल्य पर किसानों से बीज आलू वापस खरीदता है और उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल में किसानों को वितरित करता है.

सोयाबीन में रहेगी तेजी

नई दिल्ली एनसीडीईएक्स पर सोयाबीन 2 प्रतिशत से ज्यादा तेजी के साथ 4,800 के स्तर के आसपास कामकाज कर रहा है। इस तेजी की मुख्य वजह मानसून के कमजोर रहने की संभावना है, जिसका अनुमान मौसम विभाग ने पिछले हफ्ते लगाया था। सोयाबीन की बुआई सामान्य तौर पर जून के अंत या जुलाई के पहले हफ्ते में मानसून की पहली बारिश के बाद की जाती है। कोटक कमोडिटी के धर्मेश भाटिया का मानना है कि आने वाले दिनों में सोयाबीन के भाव 5,000 रुपए के स्तर को छू सकते हैं। निवेशक 4650 रुपए के स्टॉपलॉस के साथ खरीददारी करके चल सकते हैं।

सोयाबीन के उत्पादन में अमेरिका, ब्राजील, अर्जेन्टीना और चीन के बाद भारत का नंबर आता है। भारत में सोयाबीन का उत्पादन मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, और आंध्र प्रदेश में होता है।

फल उद्यान कैसे लगावें

डॉ. राकेश कुमार शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी)
डॉ. स्वप्निल दुबे
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

भारत कृषि प्रधान देश है और इसकी अर्थव्यवस्था में फलोत्पादन का महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान समय में किसान बागवानी फसलों की ओर काफी संख्या में आकृष्ट हो रहा है। फल पौष्टिकता के कारण मानव स्वास्थ्य के लिये अति आवश्यक है। किसानों की आर्थिक दशा में सुधार लाने के उपायों में कृषि उद्यानिकी पद्धति एक प्रमुख है। फलदार वृक्ष फल देने में एक निश्चित समय लेते हैं। अतः एक ही खेत में फलदार वृक्ष के रोपण एवं फल देने की अवधि में एवं उसके बाद भी उनके बीच के खाली स्थानों में वातावरण, भूमि एवं वृक्ष की प्रकृति के अनुरूप उचित अन्तरवर्तीय फसल की खेती की जाए तो प्रारंभ से ही खेत से आमदनी मिलती रहती है तथा वृक्षों का रखरखाव भी उचित ढंग से होता रहता है। फल देने की अवस्था में आने के बाद इन वृक्षों से भी आमदनी होती है। जो कि किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूती प्रदान करती है। बगीचा लगाना एक दीर्घकालीन लागत योजना है, जिसके परिणाम तत्काल नहीं मिलकर, वर्षों बाद मिलना शुरू होते हैं। इस कार्य में शुरूआत की गलतियां हमेशा के लिये कठिनाइयाँ पैदा करती हैं और लाभ के स्थान पर हानि उठानी पड़ती है। सही ढंग से लगाये गये बगीचे न केवल अत्यन्त लाभकारी व्यवसाय सिद्ध होगा, अपितु कृषक परिवार की आय वृद्धि होगी, उपलब्ध श्रम व साधनों का भरपूर उपयोग हो सकेगा। बगीचा लगाना एक स्थायी नियोजन है जिसके लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए:–

1. भूमि का चयन : – बगीचा लगाने के लिए उपयुक्त भूमि का चयन कर उसके अनुकूल ही फलदार पौधों का चयन करना चाहिए। फलदार पौधों के लिए गहरी उपजाऊ एवं अच्छे जल निकास वाली भूमि आवश्यक है ध्यान रहे, भूमि सतह से 2 मीटर नीचे तक कठोर, कंकड़युक्त, पथरीली, चूना युक्त परत नहीं होनी चाहिये। बगीचा लगाने से पहले भूमि के तीन फुट की गहराई तक मिटट्री की जांच अवश्य करानी चाहिये। अधिक लवणीय एवं क्षारीय भूमि में आम व पपीता का चयन न करें। अधिक लवणीय भूमि में खजूर, बेर, जामुन जैसे पौधे तथा कम लवणीय भूमि में आंवला, फालसा, अनार, अंजीर आदि फलों के पौधे लगाये जा सकते हैं।

2. उपयुक्त फलदार पौधों का चयन : – बगीचा लगाने हेतु फलदार पौधों का चयन वहां की जलवायु, सिंचाई के साधन, सड़क, बाजार व्यवस्था, तकनीकी ज्ञान की जानकारी, जंगली जानवरों से सुरक्षा आदि के आधार पर करना चाहिये। बगीचे में लगाने हेतु चयनित किये जाने वालें पौधों की गुणवत्ता तथा प्रजाति आदि पर भी विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यक्ता है।

- यथा संभव पौधा कलमी होना चाहिए।
- बढ़वार मध्यम आकार की हो।
- पौधे की प्रजाति उन्नत हो तथा क्षेत्र की जलवायु के लिये उपयुक्त हो।

बगीचा लगाने हेतु आवश्यक कार्य

1. बाड़ लगाना : – बगीचा लगाने से पूर्व उसकी सुरक्षा हेतु खेत के चारों ओर बाड़ लगाना एक बुद्धिमता पूर्ण कार्य होगा। बाड़ लगाने से खेत में आवारा पशु व जंगली जानवरों के अनावश्यक प्रवेश को रोका जा सकता है। बाड़ लगाने के लिए कंटीले तार, कांटेदार पौधे अथवा झाड़ियां लगाई जा सकती है। करोंदा, बेर के झाड़, थोर, नागफनी, जंगल जलेबी, मेहंदी, सागर गोटा, निर्गुण्डी आदि पौधे खेत की चार दीवारी पर लगाये जा सकते हैं जो बाड़ का कार्य भी करते हैं तथा अतिरिक्त आय भी प्राप्त होती है।

2. वायुरोधक पेड़ लगाना : – बाड़ की तरह ही बगीचा लगाने से पूर्व बगीचे के उत्तर व पश्चिम दिशा में लम्बे, शीघ्र बढ़ने वाले घने पेड़ो की कतार आवश्यक रूप से लगा दी जानी चाहिए। ये वायुरोधक वृक्ष तेज गर्म हवाओं व शीत लहर से बगीचे के फल वृक्षों की सुरक्षा करते हैं। इस हेतु शीशम, अरडू, जामुन, बबूल, देशी आम, बेल, लसोड़ा, शहतूत आदि पौधे लगाये जा सकते हैं।

3. सिंचाई की व्यवस्था : – बगीचे में सिंचाई की उपयुक्त व्यवस्था की जानी चाहिए। सिंचाई की नालियाँ पौधों की कतारों के मध्य से निकालनी चाहिये ताकि दो कतारों को एक ही नाली से दोनों तरफ आवश्यकतानुसार थांवले बनाकर पानी दिया जा सके। पौधों की कतारों से नालियाँ नही निकालें क्योंकि इससे पौधों में रोग फैलने की संभावना बढ़ जाती है तथा खाद भी आखिरी पौधे में पहुंच जाता है। बगीचे में सिंचाई के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विधि बूंद–बूंद सिंचाई (ड्रिप विधि) है। इससे पानी व श्रम दोनों की बचत होगी तथा पौधों को आवश्यकतानुसार पानी मिलने के कारण पैदावार में वृद्धि होती है।

4. फल वृक्षों का उचित दूरी पर रेखांकन:–

क्र.सं.	फल नाम	पौधे से पौधे व कतार से कतार की दूरी(मीटर में)	प्रति हैक्टेयर में पौधों की संख्या
1.	आम	10 ग 10 या 8 ग 8	100 व 156
2.	आंवला	8 ग 8 या 6 ग 6	156 व 277
3.	अमरूद	6 ग 6	277
4.	अनार	5 ग 5	400
5.	नींबू/संतरा	6 ग 6	277
6.	बेर	6 ग 6	277
7.	बील	8 ग 8	156
8.	पपीता	2 ग 2	2500

जड़ो के विकास तथा पौधों के फैलाव, जुताई व निराई–गुड़ाई, पौध संरक्षण कार्य, पर्याप्त हवा, धूप व रोशनी के लिये एक पौधे से दूसरे पौधे सही दूरी चाहिये। इससे पौधों के बीच अन्तरवर्ती फसलें ले सकते हैं।

बगीचों को वर्गाकार विधि से ही लगाना चाहिए, क्योंकि यह सबसे आसान व सुगम तरीका है। उद्यान का रेखांकन करने के लिए सर्वप्रथम खेत के किसी किनारे से आवश्यक दूरी की आधी दूरी पर प्रथम पंक्ति का रेखांकन करते हैं उसके बाद आवश्यक दूरी पर प्रत्येक पंक्ति का रेखांकन करते हैं।

5. पौधे लगाने के लिए गड्डों की खुदाई :–

क्र.स.	नाम फल	गड्ढ़ों का आकार (फुट में)
1.	आम, आंवला, बील	3 ग 3 ग 3
2.	अमरूद, अनार, नींबू, बेर	2.5 ग 2.5 ग 2.5
3.	पपीता	1.5 ग 1.5 ग 1.5

पौध लगाने के एक माह पूर्व अर्थात मई–जून में निशिचित दूरी के चिन्हित स्थान पर गढ्डे खोदकर उन्हे खुला छोड़ देना चाहिए ताकि तेज धूप से हानिकारक कीटाणु व जीवाणु नष्ट हो जायें। गढ्डे खोदते समय ऊपर की आधी उपजाऊ मिट्टी एक तरफ रख देनी चाहिए तथा शेष आधी मिट्टी एक तरफ डालनी चाहिए।

6. गड्ढों की भराई : – गड्ढों की खुदाई के एक माह बाद खेत की ऊपरी उपजाऊ मिट्टी में निम्न मिश्रण मिलाकर भर देना चाहिये।

1.	गोबर की सड़ी हूई खाद	20–25 कि.ग्रा./गड्ढा
2.	सुपर फास्फेट	1 कि.ग्रा./गड्ढा
3.	क्लोरोपाइरीफॉस चूर्ण	50 ग्राम/गड्ढा
4.	क्षारीय भूमि हो तो	1 कि.ग्रा. जिप्सम/गड्ढा
5.	नीम की खली	2 कि.ग्रा./गड्ढा

वर्षा प्रारंभ होने से पूर्व उपरोक्त मिश्रण से गड्ढों को भर देना चाहिए। शेष जगह में नीचे वाली मिट्टी खेत की सतह से कुछ ऊंचाई तक भर देना चाहिये। तथा भरपूर मात्रा में पानी भर दें जिससे गड्ढे की मिट्टी भली भांति बैठ जावे। एक दो वर्षा होने के बाद ही पौधा रोपण करना चाहिये।

7. प्रमुख किस्में:–

क्र.	फल का नाम	किस्में
1.	आम	दशहरी, लंगड़ा, बम्बई हरा, चौंसा, फजली, तोतापुरी, केसर, हापुस, आम्रपाली, मल्लिका, अलफांसो, गुलाबखास तथा बॉम्बेग्रीन।
2.	आंवला?	कृष्णा, कंचन, एन.ए.–7, चकैया, बनारसी, हाथीझूल, आनन्द– 1
3.	अमरूद	लखनऊ– 49, अर्का मृदुला, इलाहबादी सफेदा, चित्तीदार, ऐपल कलर,डोलका, हिसार–सपफेदा, हिसार सुर्ख, हिसार ललित, ललित इत्यादि।
4.	अनार	गणेश, जालौर सीडलैस, मृदुला, काबुल, इत्यादि।
5.	नींबू	कागजी कला, पन्त लेमन–1, प्रमालिनी, विक्रम, चक्रधर, पी.के.एम–1, सेलेक्सन–49, सीडलेस लाइम इत्यादि।
6.	बेर	गोला, सेब, उमरान, मुण्डिया, बनारसी कड़का, कैथली
7.	पपीता	पूसा डेलीसियस, पूसा मैजिस्टी, पूसा जायन्ट, पूसा ड्वार्फ, पूसा नन्हा, सूर्या, हनीड्यू, कुर्ग हनीड्यू, वाशिंगटन, कोयम्बटूर–1, कोयम्बटूर–2, कोयम्बटूर–3, कोयम्बटूर–5, कोयम्बटूर –6, कोयम्बटूर–7, सोलो इत्यादि।

पौधा रोपण का सही तरीका :–

1. उन्नत किस्म के फलदार पौधे राजकीय नर्सरी या पंजीकृत नर्सरी से ही खरीदें।
2. पौधों की रोपाई के लिए जुलाई अगस्त माह सर्वश्रेष्ठ है।
3. पौधे हमेशा शाम के समय लगाने चाहिए एवं पौधा लगाने के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए।
4. गडढ़ो के बीच में से उतनी ही मिट्टी निकालनी चाहिए जितना कि पौधे की जड़ो के साथ मिट्टी के पिण्ड का आकार है।
5. पौधे लगाने से पूर्व लिपटी हूई घास, पॉलीथीन थैली को मिट्टी के पिण्ड से हल्के से हटा देना चाहिये।
6. पौधे पर पैबंद चढ़ा स्थान और शाखा के जुड़ाव का स्थान भूमि तल से 25 सें.मी. ऊपर रहना चाहिए।
7. आवश्यक्ता होने पर नवरोपित पौधे को लकड़ी गाड़ कर सहारा दें ताकि पौधा झुके नहीं।
8. वर्षा नही होने पर आवश्यक्तानुसार सिंचाई करें।
9. पेबन्ध या कलिकायन के नीचे से फूटने वाली शाखाओं तथा रोगग्रस्त शाखाओं को हटाते रहें।
10. निंदाई गुड़ाई एवं जल निकास की व्यवस्था करें।

समस्या ग्रस्त मृदा एवं पानी का सुधार किस प्रकार करे

डॉ. बी.एस. राठौड़
आचार्य, कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर–जोधपुर 342304

उन्नत खेती के लिए ऊपजाऊ मृदा तथा अनुकूल जलवायु का होना नितान्त आवश्यक है । जलवायु को तो बदला नही जा सकता परन्तु मृदा की बिगड़ी दशा को सुधारा जा सकता है। वैसे तो सभी मृदाओं में थोड़े बहुत घुलनशील लवण होते है लेकिन जब इन घुलनशीनल लवणों की मात्रा सामान्य स्तर से अधिक हो जाती है तो ये पौधों के लिए हानिकारक सिद्ध होते है । राजस्थान में ऊसर मृदाओं का क्षेत्रफल लगभग 6.6 लाख हैक्टेयर है जहा पर फसलोत्पादन नही होता है या ऊपज बहुत कम होती है । समस्या जटिल तब हो जाती है जब सिंचाई जल भी खारा होता है।

ऐसी विषम परिस्थितियों में किसान भाईयों को हताश न होकर ऊसर मृदा एवं खारे पानी का वैज्ञानिक तरीके से प्रबन्धन कर उन्नत खेती करनी चाहिये। इस तरह की मृदाओं को सुधारने से पहले यह जानना आवश्यक हो जाता है कि यह किस प्रकार की समस्याग्रस्त मिट्टी है । ऊसर प्रभावित मृदाओं को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा जाता है ।

(1) लवणीय मृदा – इन मृदाओ में ऊपरी सतह पर सफेद रंग की राख जैसी नरम परत जमी हुई दिखाई देती है जो कि धुलनशील लवणों की अधिकता के कारण होती है । ऐसी मृदाओं को उनके रासायनिक गुणों के आधार पर भी पहचाना जाता है (तालिका–1)

(2) क्षारीय मृदा – ये मृदाऐं दिखनें में भूरे काले रंग की सख्त व चिकनी होती है। इन मृदाओं में एक बार पानी भरने पर वह कई दिनों तक भरा रहता है क्योकि इनके नीचे विनिमयशील सोडीयम की कड़ी सतह होती है । ऐसी मृदाऐ सूखनें पर मिटटी बहुत कडी हो जाती है तथा दरारें पड़ जाती है । इनको रासायनिक गुणों के आधार पर भी पहचाना जा सकता है (तालिका–1)

(3) लवणीय एवं क्षारीय मृदा – इस प्रकार की मृदाओं में दोनो प्रकार की समस्या होती है । अर्थात् ये सफेद एवं भूरे काले रंग की होती है इसमें घुलनशील लवणों एवं विनिमयशील सोडियम दोनों की अधिकता होती है । ये मृदाएं सूखने पर सख्त होती है और इनमें दरारे पड जाती है इस प्रकार की मृदाओं को रासायनिक गुणो के आधार पर भी पहचाना जा सकता है (तालिका–1)

खेत की मिटटी के साथ साथ सिंचाई में प्रयुक्त होने वाले जल का भी परीक्षण करवाना चाहियें क्योकि भिन्न भिन्न स्त्रोतों का पानी भी भिन्न भिन्न गुणो वाला होता है । मृदु जल तो सिंचाई के लिए उत्तम होता है परन्तु दुर्भाग्यवश इसकी उपलब्धता सीमित है । सिंचित क्षेत्रो में पाये जाने वाली समस्याओं में खारे पानी की समस्या प्रमुख है। हमारे सम्भाग मे खारे पानी की समस्या बीकानेर,जैसलमेर,जोधपुर,बाडमेर व नागोर जिले में अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है । ऐसी स्थिति में किसान भाइयों को मजबूरीवश खारे पानी से सिचाई करनी पड़ती है जिससे वांच्छित परिणाम नही मिलते है । अतः किसान भाइयों को सिंचाई योजना बनाने से पहले जल की गुणवत्ता की जांच करवा लेनी चाहिये। अर्थात् नहर, तालाब, खुला कूप एवं नलकूप से पानी का नमूना लेकर इसे प्रयोगशाला से परीक्षण करवा कर फिर सिफारिश के अनुसार इसका सिंचाई में प्रयोग करना चाहिए ।

लवणीय जल (खारा पानी) को इसके रासायनिक गुणो (विधुत चालकता, सोडीयम अधिशोषण अनुपात, अवशिष्ट सोडियम कार्बोनेट) के आधार पर अलग अलग वर्गो में बांटा गया है (तालिका–2)

समस्या ग्रस्त मृदा का प्रबन्ध एवं लवणीय सिंचाई जल का उपयोग

1) उत्तम भूपरिष्करण : समस्याग्रस्त भूमि को समतल रखना बहुत आवश्यक होता है क्योकि असमतल भूमि में ऊँचे स्थानों पर पानी नही पहुच पाने के कारण वहां लवण एकत्रित होते रहते है और जब ये मृदाए सूखती है तो लवणीय मिटटी में उपरी सतह पर पपड़ी बनना शुरू हो जाती है । क्षारीय भूमि में सोडीयम तत्व की अधिकता के कारण इन मृदाओ की भौतिक दशा बहुत खराब हो जाती है । इस कारण यह गीली होती है तो दलदली हो जाती है और सूखने पर कड़ी हो जाती है इसीलिए ऐसी भूमि में नमी मध्यम हो तभी जुताई करनी चाहिये ।

भूमि पर पायी जाने वाली सफेद पपड़ी को फावड़े अथवा ट्रेक्टर के पीछे स्क्रेपर लगाकर खुरच लेना चाहिए। खुरचे हुए लवणो को खेत के ढ़लान वाली दिशा में खाई खोद कर जमीन में गाढ देवे ।

बरसात से पहले ऐसी भूमि में गहरी जुताई करना लाभदायक भी है व हानिकारक भी है । अगर नीचे की सतह की लवणीयता ऊपर की सतह से अधिक है तो गहरी जुताई लवणों को ऊपर ले आवेगी और भूमि के खराब होने की सम्भवना हो सकती है और यदि ऊँपरी सतह पर लवणीयता अधिक है तो गहरी जुताई उनको नीचे की सतह में ले जाने में सहायक होगी इसीलिए किसान भाइयों भूमि समस्याग्रस्त है तो भूमि की विभिन्न सतहों की मिट्टी का प्रयोगशाला में जांच करवाकर आवश्यकता अनुसार जुताई करे।

2) खेत की तैयारी एवं भूमि सुधारक पदार्थो का प्रयोग :– ऊसर मृदाओ में प्रायः देखा गया है कि हयूमस, नत्रजन, फास्फोरस, जिंक, लोहा, केलिशियम आदि की मात्रा काफी कम होती है यदि कार्बनिक खाद जैसे गोबर, मिगंणी की खाद, कम्फोस्ट आदि दी जाये तो इन मृदाओ की भौतिक दशाओं को सुधारा जा सकता है । मृदा क्षारीय हो एवं अत्यधिक जटिल हो तो उसमें रासायनिक सुधारक जैसे – जिप्सम का प्रयोग करना आवश्यक है अतः मिट्टी की उपयुक्त जांच करवाकर यह जान लेना चाहिए कि इसमें कितनी जिप्सम की मात्रा की आवश्यकता है । मृदा परीक्षण एवं अनुसंधान से पता चला है कि जिप्सम की आवश्यक मात्रा का आधा भाग डालने पर भी काफी अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं। रबी की फसल काटने के तुरन्त बाद खेत की जुताई करके 10 से 15 सेमी की गहराई तक जिप्सम मिला देवे । जिप्सम हमेशा बारीक पिसी हुई काम में लेवे । जिप्सम कृषि विभाग द्वारा अनुदान पर भी दिलवाया जाता है । किसान भाइयों को इसका लाभ उठाना चाहियें । जिप्सम मिला देने के पश्चात् खेत में पाटा लगाकर भूमि को समतल कर उसके चारो और मेड़ बना ले। यदि पूरे खेंत में सुविधानुसार क्यारियाँ बना लेवे तो ज्यादा अच्छा रहता है यह कार्य वर्षा शुरू होने से पहले करना चाहियें ताकि वर्षा का पानी उसमें कुछ दिनो के लिये इक्कठ्ा हो सके ।

तालिका 1 ऊसर मृदा का रासायनिक गुणो के आधार पर वर्गीकरण

क्रम	रासायनिक गुण	लवणीय मृदा	क्षारीय मृदा	लवणीय–क्षारीय मृदा
1	पी.एच.मान	8.5 से कम	8.5 से अधिक	8.5 से कम
2	विधुत चालकता (डे. सा. प्रति मी) संतृप्त घोल में	4.0 से अधिक	4.0 से कम	4.0 से अधिक
3	विनमय सोडीयम			
	(प्रतिशत)	15 से कम	15 से अधिक	15 से अधिक

3) हरी खाद का प्रयोग : ऊसर भूमि को सुधारते समय सर्वप्रथम ढ़ेचा (इकर) को हरी खाद के रूप में लेना चाहिए क्योकि ढ़ेचे की राख में 34.2 प्रतिशत कैल्शियम ऑक्साइड एवं 0.62 प्रतिशत नत्रजन की मात्रा होती है । इसके पौध रस का पी.एच मान अम्लीय (4.01) होता है ।

खरीफ में हरी खाद के लिए ढ़ेचा के बीजों को 75–80 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में छिड़काव विधि से बोना चाहिए । इसकी बुवाई जुलाई माह मे कर देनी चाहिए । बुवाई के 45–50 दिन बाद ढ़ेचे के पौधो को खेत में हल चलाकर जमीन में दबा देना चाहिए । ढ़ेचा मिटटी में मिलाने के ढाई –तीन माह बाद तक खेत को वैसे ही खाली छोड़ देवे ताकि ढ़ेचा के पौधे उसमें सड़ गल कर अच्छी हरी खाद के रूप में बदल जावें । आवश्यकतानुसार सिंचाई द्वारा गीला कर देवे क्योकि उचित नमी से सड़ने की क्रिया तीव्र होती है। रबी में लवण सहनशील फसलें ली जा सकती है ।

4) बुवाई : फसलों मे पौधो की छोटी अवस्था में लवणों का प्रभाव अधिक पड़ता है अतः प्रारम्भ में ही यदि किसी तरह पौधो को लवणों के बुरे प्रभाव से बचा लिया जाय तो अच्छी पैदावार की सम्भावना बढ़ जाती हैं। अगर पक्तियों में उगाई जाने वाली फसलों के लिए नाली तथा मेड़ बना ली जाय और बीजों को मेड़ के ऊपरी भाग पर न बोकर बगल मे उत्तर दिशा मे बोये तो ऊसर भूमि पर भी अच्छी फसल उगायी जा सकती हैं । समस्याग्रस्त मिट्टीयों में बुवाई करते समय बीज की मात्रा 20– 25 प्रतिशत अधिक रखी जानी चाहिए । बीजों को बोने से पहले एक से दो प्रतिशत सोडीयम सल्फेट के घोल में भिगोकर बाद में साफ पानी में धोकर एवं छाया में सुखाकर फिर बुवाई के काम में लेने से अंकुरण अच्छा होता हैं ।

5) उर्वरको का प्रयोग : समस्याग्रस्त मिट्टीयों में नत्रजन एवं फास्फोरस तत्वों की पूर्ति के लिये क्रमशः अमोनियम सल्फेट एवं सिंगल सुपर फास्फेट उर्वरक का प्रयोग करे । नत्रजन के लिए केल्शियम अमोनियम नाइट्रेट का प्रयोग भी किया जा सकता है । नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय ऊर कर देवे । बची हुई नत्रजन को बाद में दो भागो में बॉट कर देवे ।

6) सिंचाई :– समस्याग्रस्त मृदाओं में सूखी बुवाई करे तथा प्रथम सिंचाई भारी करे बाद में हल्की सिचाईयां करें। इस तरह से कुल सिंचाई की सख्या को बढ़ावे (सिंचाई अन्तराल कम करें) मगर हर बार हल्की सिंचाई करें। बूँद बूँद सिंचाई पद्धति से भी सिंचाई की जा सकती हैं ।

7) फसल का चुनाव : फसलों का चुनाव भूमि की उसरता के अंश पर निर्भर करता हैं । फसलों के जीवित रहने की क्षमता के आधार पर फसलों को तीन भागों में बॉटा गया हैं ।

सभी फसलों की लवणरोधी किस्मों का चुनाव करना चाहिए।

1) न्यून सहिष्णु फसलें : जब समस्याग्रस्त मृदाओ का लवण स्तर 4.0 डे.सा . प्रति मीटर से कम हो तो दलहनीय फसलों में चना, मूँग एवं उडद आदि फसलें ली जा सकती है । इस तरह की मृदाओ में अलसी, मटर तथा तिल आदि फसलें उगायी जा सकती हैं ।

2) मध्यम रूप से सहिष्णु फसले : इस तरह की मृदाओं जिनका लवण स्तर 4–8 डे. सा. प्रति मीटर हो तो ज्वार, मक्का, जई, गेहूँ तथा बाजरा की फसल ली जा सकती हैं । तेलीय फसलों में अरण्डी एवं संरसो की फसल ली जा सकती हैं । सब्जी में टमाटर एवं आलू की खेती की जा सकती हैं । फलो में आम व अनार लिया जा सकता हैं इसके अलावा इस तरह की मृदाओं में कपास की खेती भी की जा सकती हैं ।

3) लवणों की अधिक मात्रा के प्रति सहिष्णु फसलें : जहा लवणों की मात्रा बहुत अधिक होती है अर्थात् लवणीयता 8–16 डे. सा. प्रति मीटर हो तो ऐसी मृदाओं में जौ की खेती की जा सकती है। फलों में अमरूद एवं खजूर लिया जा सकता है । इसके अतिरिक्त सब्जियों में चुकून्दर, शलजम एवं पालक लिया जा सकता है।

इस प्रकार किसान भाई लवणीय व क्षारीय मृदाओं का वैज्ञानिक तरीके से अच्छा प्रबन्धन एव खारे पानी का उपयोग करके फसलो की अधिक उपज ले सकते है।

तालिका 2 खारे पानी का गुणवत्ता के आधार पर वर्गीकरण

कम	विधुत चालकता (डे. सा. प्र. मी.)	सोडीयम अधिशोषण (अनुपात)	अवशिष्ट सोडीयम कार्बोनेट (मान)	स्तर
1	1.5 से कम	10 सें कम	1.25 से कम	निम्न
2	1.5 से 3.0	10 से 15	1.25 से 2.5	मध्यम
3	3.0 से अधिक	15 से 26	2.5 से 5.0	उच्च

मधुमक्खी पालन–लाभकारी व्यवसाय

निर्मल कुमार, दलीप कुमार, सतीश मेहता, अत्तर सिंह
कृषि विज्ञान केन्द्र, भिवानी

भारत में 60–65 प्रतिशत जनसख्या खेती पर आधारित है। किसानों की जोत घटती जा रही है इसलिए किसान खेती के अलावा अन्य धंधे जैसे मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, पशुपालन, मछली पालन, मुर्गी पालन और भेड़ व बकरी पालन आदि व्यवसाय आरम्भ करके अधिक लाभ कमा सकते हैं। इनमें से मधुमक्खी पालन किसानों के लिए खेती के अलावा अतिरिक्त आमदनी का एक उत्तम व्यवसाय है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें जमीन की आवश्यकता नहीं होती, भूमिहीन कम पढ़े लिखे, अनपढ़ व महिलाएं भी इस रोजगार को अपना सकते हैं। इसके लिए हरियाणा में जिला स्तर पर कृषि विज्ञान केन्द्र तथा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसमें आप प्रशिक्षित होकर इस व्यवसाय को आसानी से अपना सकते हैं। शुरू में छोटे मौनालय (10–12 वंशों) का चयन करना चाहिए। आधुनिक मधुमक्खी पालन की विधियों से मधुमक्खी पालक मौनवंश की उत्तम व्यवस्था कर सकते हैं तथा बढ़िया और अधिक शहद पैदा कर सकते हैं। इससे फसलों में परपरागण द्वारा पैदावार में बढ़ोतरी होती है। शहद में लगभग 75 प्रतिशत शर्करा होती है जिसमें से फ्रक्टोस, ग्लूकोज, सुल्फोज, माल्टोज व लेक्टोज आदि प्रमुख हैं। इसमें अन्य पदार्थों के रूप में प्रोटीन, वसा, एन्जाइम भी पाया जाता है। यही नहीं शहद में विटामिन ए, बी–1, बी–2, बी–3, बी–5, बी–6, बी–12 तथा अल्प मात्रा में विटामिन सी, विटामिन एच और विटामीन के भी पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें लोहा, फास्फोरस, कैल्शियम और आयोडीन भी पाए जाते हैं। दूध के बाद शहद में वे सभी तत्व पाए जाते हैं जो संतुलित आहार में होने चाहिए। शहद नेत्र ज्योति को बढ़ाता है, प्यास को शांत करता, कफ को घोलकर बाहर निकालता और शरीर में विषाक्तता को कम करता है। यह वात और कफ को नियंत्रित करता है तथा रक्त व पित्त को सामान्य रखता है। इतना ही नहीं यह मूत्रमार्ग में उत्पन्न व्याधियों तथा निमोनिया, खॉसी, डायरिया और दमा आदि में बहुत उपयोगी होता है।

भारतीय उपमहाद्वीप में मधुमक्खियों की प्रमुख 4 प्रजातियाँ हैं। पहाड़ी या सारंग मधुमक्खी से औसतन 30–35 किलोग्राम शहद प्रति छत्ता मिल सकता है। छोटी या मूंगा मधुमक्खी के एक वंश से वर्ष भर में शहद पैदा करने की क्षमता एक या डेढ़ किलोग्राम ही है। भारतीय मधुमक्खी से लगभग 7–10 किलोग्राम शहद प्रति वर्ष प्रति वशं प्राप्त किया जा सकता है। इटालियन मधुमक्खी से 40–50 किलोग्राम शहद प्रति वंश प्राप्त किया जा सकता है। भारत में विशेषतः हरियाणा राज्य में इटालियन मधुमक्खियॉ ही पाली जाती हैं।

मधुमक्खियां आपस में मिलजुलकर कार्य करती हैं जिसके कारण इन्हें सामाजिक कीट कहा जाता है। मधुमक्खी के पूरे परिवार में एक रानी मक्खी, कई हजार कमेरी मक्खियां तथा सैंकड़ों की संख्या में नर मक्खियां (निखट्टू) होते हैं। मधुमक्खी परिवार के प्रत्येक सदस्य का अपना अलग–अलग कार्य होता है। अण्डे से लेकर युवावस्था शुरू होने तक रानी का जीवन चक्र 15–16 दिनों में, कमेरी का 20–21 दिनों में तथा नर का जीवन चक्र 23–24 दिनों में पूरा हो जाता है।

मधुमक्खी वंशों की प्रगति जानने के लिए आमतौर पर इनका 15–20 दिन के अन्तर पर अवलोकन करना चाहिए परन्तु वकछूट के मौसम (जनवरी से अप्रैल) में 6–7 दिन के अन्तराल पर अवलोकन करना आवश्यक है। हरियाणा प्रदेश में विभिन्न महीनों में मधुमक्खी वंशों की देखभाल ऋतुओं के अनुसार जैसे मानसून के बाद/सर्दी से पहले, सर्दी का समय, बसन्त व गर्मी की शुरूआत, गर्मी व बरसात में मधुमक्खी पालन विशेषज्ञ द्वारा बताए गये सुझावों को ध्यान में रखकर करें।

मुख्य फसल व क्षेत्र

मधुमक्खियॉ शहद उत्पादन के लिए फसलें जैसे सरसों, चना, मेथी, बरसीम, शीशम, नीम, जामुन, सफेदा, बेर, सूरजमुखी, बाजरा, कपास, तिल अथवा अरहर आदि के फूलों से मकंरद लेकर मधु का संचय करती है। दक्षिण–पश्चिम हरियाणा के हिसार, भिवानी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, गुड़गांव जिलों के रबी के मौसम में सरसों के अन्तर्गत बहुत बड़ा क्षेत्रफल है इसलिए इन क्षेत्रों में इस मौसम में यह व्यवसाय विशेष तौर पर बहुत ही लाभदायक साबित होता है। मधुमक्खी पालन से ज्यादात्तर मुनाफा शहद उत्पादन के माध्यम से अर्जित किया जाता है। इसके अलावा अन्य उत्पाद जैसे मोम, राज अवलेह, पराग, मधुमक्खी विष तथा मोन वंश बेचकर भी लाभ कमाया जा सकता है। मधुमक्खी पालन में आय लागत अनुपात इस प्रकार है।

प्रशिक्षण एवं अन्य वैज्ञानिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें –

1. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, कीट विज्ञान विभाग, चौ.च.सिं.ह. कृ.वि., हिसार।
2. समन्वयक, समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र, हरियाणा।
3. उप निदेशक, पौध संरक्षण, कृषि निदेशालय हरियाणा, पंचकुला।
4. निदेशक, कृषि विज्ञान केन्द्र, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल।
5. हरियाणा एग्रो इण्डस्टीज आर एंड डी सैन्टर, मुरथल, सोनीपत।
6. केन्द्रीय मधुमक्खी शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, 1153, गणेशाखिड रोड, पूने, महाराष्ट्र।

वार्षिक शुद्ध लाभ का विवरण

क.सं.	विवरण	कुल खर्च (रू)	अशुद्ध लाभ (रू)	शुद्ध लाभ (रू)
1	10 कॉलोनी	11512	98550	87038
2	100 कॉलोनी	190428	985500	795072
3	आय लागत अनुपात	5.15		

राष्ट्रीय बागवानी मिशन के माध्यम से मौन पालन पर दी जाने वाली अनुदान राशि

क.सं.	सामग्री	अनुमानित लागत (रू)	अनुदान प्रति इकाई (रू)
1	मधुमक्खी ब्रीडरः उत्पादन 2000 कॉलोनी प्रति वर्ष	600000	300000
2	मधुमक्खी कॉलोनी 4 फ्रेम वाली(50 कॉलोनी तक)	1400	700
3	मधुमक्खी छत्ते (50 कॉलोनी तक)	1600	8000
4	शहद निकालने के उपकरण	14000	7000

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का
नामः.....
संस्था का
नामः.....
पूरा पताः.....
ग्राम :.....तहसील :.....
जिलाः.....राज्यः.....पिन कोड
दूरभाष कार्यः.....निवासः.....

सदस्यता राशि

एक वर्ष :151 ☐ तीन वर्ष :351 ☐ पांच वर्ष :501 ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :.....

बैंक का नाम:..... ड्राफ्ट चेक क्रमांकः.....दिनांकः.....

स्थानः..... प्रतिनिधि का नामः.....हस्ताक्षर सदस्यः.....

दिनांकः.....

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

पेलिकन को अन्नासागर झील रास आ रहा...

गर्मियां बढ़ रही हैं और पेलिकन अभी भी आनासागर झील के छिछले पानी में अभी जमे हुए हैं। यह अलग बात है कि पहले सड़क चलते दिखाने देने वाले ये पूर्वी यूरोप से आए प्रवासी पक्षी अब रीजनल कॉलेज के सामने झाडियों में ही झुंड के रूप में नजर आ रहे हैं। सर गंगा सिंह विश्वविद्यालय में पर्यावरण विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ अनिल छंगाणी के अनुसार आनासागर झील में पर्याप्त लाइफ स्टॉक इसका एक कारण है। पर्याप्त मछलियों के कारण ही चमचा चोंच पक्षी भी यहां आए हैं। दूसरे पूर्वी यूरोपीय देशों में हिमपात और अजमेर जिले में ही बार बार ओलावृष्टि और बारिश से अभी गर्मी के वैसे हालात नहीं बने हैं जैसे अमूमन अब तक बन जाते हैं।

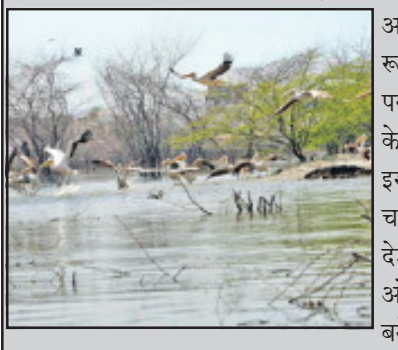

आंध्र में पकड़ा गया 15 फीट लंबा कोबरा

राजमुंदरी। आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले में 15 फीट लंबा एक दुर्लभ किंग कोबरा सांप पकड़ा गया है। इसे वन अधिकारियों ने रविवार को एक घर के पास से पकड़ा। वन अधिकारी ने बताया कि जिले के रामपचोदावरम इलाके में रहने वाले एक व्यक्ति को अपने घर के करीब शनिवार की रात कुछ अजीब तरह की आवाजें सुनाई दीं। वह जब इसकी जांच करने गया तो उसने एक कोबरा को आराम करते देखा। इसके बाद वह और उसके पड़ोसियों ने क्षेत्र के वन अधिकारियों को इसकी सूचना दी। उन्होंने कहा कि इसके बाद वन विभाग की एक टीम जाल, लाठी और अन्य साजो सामान के साथ सांप को पकड़ने के लिए पहुंची। चार घंटे की कोशिशों के बाद कोबरा को जीवित पकड़ लिया गया। उसे विशाखापत्तनम प्राणी उद्यान भेजने की व्यवस्था हो रही है।

झाडियों में दुपकी बैठी थी मादा भालू, इजेक्शन लगते ही दौड़ने लगी दीवार पर

कोटा. मुकंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व से थर्मल एरिया में भालू आने की सूचना थी। मुकंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व, वन्यजीव रेस्क्यू टीम, वाइल्ड लाइफ स्वयंसेवक टीम मौके पर पहुंची। यहां चंबल की कराइयों में पंप हाउस के पास भालू की आवाजें आई। दलदल होने से उसके पास पहुंचना मुश्किल था। करीब चार वर्षीय मादा भालू झाडियों में दुबकी थी। उसे चिकित्सा टीम ने ट्रेंक्युलाइज किया। मादा भालू को ज्योंही गन से ट्रेंक्युलाइज किया तो वो इंजेक्शन लगते ही दीवार के ऊपर दौड़ी।

आगे चलकर इंजेक्शन के असर से दीवार से नीचे पानी में गिर गई। फिर उठकर दीवार के ऊपर दौडने लगी। कुछ देर बाद अचानक आंखों से ओझल हो गई। इधर-उधर टीम के सदस्य उसे तलाशने में लगे रहे। अचानक डेढ़ बजे वह एक तरफ झाडियों के झुरमुट में पड़ी दिखी।

बेहोशी की हालत में टीम उसे चंबल किनारे से उठाकर लाई। उसे पिंजरे में रखा और होश में आने वाला इंजेक्शन लगाया। बाद में मुकंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व एरिया में छोड़ दिया। टीम में वन्यजीव विभाग की रेस्क्यू टीम के अलावा मुकंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व के रेंजर सतपाल सिंह, चिडियाघर के सुपरवाइजर दीपक जासू के अलावा डॉ. कृष्णेंद्र सिंह नामा, मनीष आर्य, शिरीष, अमित शर्मा सहित अन्य मौजूद थे।

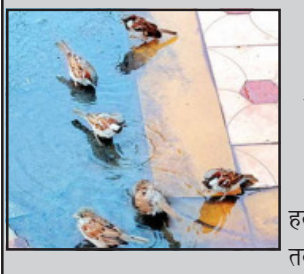

भरी गर्मी में पानी से सुकून तलाशती गौरैया

नागपुर. पारा बढने के साथ इंसान ही नहीं, पशु-पक्षी भी हलाकान होने लगे है। घर की सफाई के बाद फैले पानी में सुकून तलाशती गौरया।

ये हट्टा-कट्टा बकरा देता है रोजाना 1 किलो दूध

बाबरा (गुजरात)। अमरेली जिले का एक छोटा सा गांव बाबरा इन दिनों मीडिया की सुर्खियों में हैं। वह भी एक बकरे की वजह से। दरअसल इस गांव में एक बकरा है, जो रोजाना एक किलोग्राम दूध देता है। यह बकरा गांव में स्थित मंदिर के एक महंत के पास है। यह घटना पूरे जिले में चर्चा का विषय बनी हुई है। महंत के बताए अनुसार इस हैरतअंगेज घटना को देखने अब दूर-दराज के गांव वाले भी यहां आने लगे हैं। इस बारे में मंदिर के महंत सीमारामबापू का कहना है कि कुछ महीनों पहले तक यह साधारण बकरा ही था। लेकिन अचानक उसके थन निकल आए और जब उन्होंने उसे दुहना शुरू किया तो यह बिल्कुल बकरी के दूध जैसा ही था। इसमें भी आश्चर्य की बात यह है कि बकरे के थन को किसी भी समय दुहा जाए, उसमें से दूध आने लगता है। महंत के बताए अनुसार दिन भर में यह बकरा अब लगभग एक किलोग्राम दूध देने लगा है।

कुएं में गिरा तेंदुआ, इंजेक्शन लगाया तो हो गई मौत,वन्यजीव प्रेमियों में नाराजगी

नवरगांव. सिंदेवाही वनपरिक्षेत्र अंतर्गत आलेसुर की ग्रामपंचायत के कुएं में रविवार को तडके तेंदुआ गिर गया। जींदा तेंदुए को निकालते समय वन विभाग द्वारा लापरवाही बरतने से उसकी मौत हो गई। जिससे ग्रामीणों के साथ-साथ वन्यजीव प्रेमियों में भी नाराजी व्यक्त की जा रही है। जानकारी के अनुसार सिंदेवाही तहसील के ग्राम आलेसुर में रविवार को सुबह जब एक महिला ग्राम पंचायत के कुएं में पानी लाने गई, तब एक तेंदुआ कुएं में तैरता दिखाई दिया। यहा जानकारी संपूर्ण गांव में फैलते ही लोगों की भारी भीड़ जुट गई। वन विभाग को सूचना मिलते ही नवरगांव के 3 वनरक्षक घटनास्थल पहुंचे और तेंदुए को कुएं से बाहर निकालने की कवायद शुरू कर दी।

मई माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- गाय व भैंस से अच्छी नस्ल के बच्चे लेने के लिए उन्हें अच्छी नस्ल के सांड से गाभिन करवायें।
- पशुओं को गलघोटू रोग से बचाव का टीका लगवायें।
- पशुओं को सन्तुलित आहार दें जिससे उनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता बनी रहे।
- चिचिड़यों व पेट के कीडों से बचाव का उचित प्रबन्ध करें।
- दुधारु पशुओं का थैनेला रोग से बचाव करें।
- चारे की फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए कृषि विशेषज्ञ की सलाह अनुसार उन्नत किस्म के बीज का प्रबन्ध करें।
- गर्मियों में हरे चारे के लिए ज्वार, मक्का व लोबिया की बिजाई करें।
- पशुओं का लू से बचाव करें।
- बछड़े को बैल बनाने के लिए छः मास की आयु पर बधिया करवायें।

कृषि कार्यों में जोखिम : सुरक्षा कैसे करें

डॉ. रेखा व्यास
प्रोफेसर, आयोजना एवं परिवेक्षण निदेषालय
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

भारत में कृषि मुख्य व्यवसाय है व वर्तमान समय में भी लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या की जीविका कृषि पर आधारित है। कृषि उत्पादन में पिछले 3–4 दशकों में काफी तेजी आई है। यह सब यांत्रिक, रासायनिक व जैविक आविष्कारों की देन है। परंतु इन आविष्कारों के कारण आज मानव को कृषि में कई प्रकार के जोखिमों व दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ रहा है। ये दुर्घटनाएँ या जोखिम स्वयं ही नहीं हो जाते, इनमें मानव की नभिज्ञता, लापरवाही और अज्ञानता भी शामिल होती है।

जोखिम क्या है : यदि कोई कार्य, कार्य स्थिति व तरीका, कार्य में प्रयुक्त होने वाले उपकरण या मशीन, वातावरण, पेड़–पौधे या जानवर मनुष्य को शारीरिक, मानसिक अथवा भौतिक नुकसान पहुँचायें तो उसे जोखिम कहेंगे।

जोखिम के कारण : कृषि कार्यों में जोखिम किस प्रकार मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं यह जानना अत्यंत आवश्यक है ताकि समय रहते हम सुरक्षित कार्य शैली अपना कर अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रख सकें। कृषि कार्यों में जोखिम के निम्न कारण मुख्य हैं :–

अ. स्वयं मानव

ब. मशीन या उपकरण जो उपयोग में लिया जाये।

स. वातावरण जहाँ कार्य करना हो।

द. रसायनों का उपयोग।

जोखिमों के प्रकार :

1. शारीरिक जोखिमः

कार्य करने की अनुचित या असमान्य मुद्रा अपनाने जैसे–कमर से झुककर रोपाई, निराई–गुड़ाई करना, काटना आदि से कार्यकर्त्ता को कई प्रकार के शारीरिक जोखिम हो जाते हैं । इस प्रकार की मुद्रा में कार्य करने पर गर्दन, पीठ, कमर, बाजू, पाँव की मांसपेशियों में तनाव व खिंचाव होता है जो दर्द व थकान उत्पन्न करता है। यदि व्यक्ति कई वर्षों तक झुककर काम करता रहेगा तो उसे हमेशा के लिए कमर दर्द या रीढ़ की हड्डी संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है और उम्र होने पर रीढ़ की हड्डी झुक सकती है। इसके अलावा कृषक महिलाएँ एवं पुरुषों को अक्सर भारी वजन उठाते हुए भी पाया गया है जिससे भी स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अत्यधिक शारीरिक शक्ति व्यय हो जाने से शरीर में कमजोरी आ जाती है और ऐसे व्यक्ति को बीमारियाँ आसानी से घेर लेती हैं। गर्भवती महिलाओं में भी गर्भपात का भी खतरा रहता है।

इस प्रकार के जोखिमों से बचाव हेतु निम्न उपाय अपनाएँ :–

❖ झुककर काम करने की अपेक्षा बैठकर कार्य करना चाहिए।

❖ थोड़ी–थोड़ी देर में शारीरिक मुद्रा बदलते रहना चाहिए। शरीर के अंगों को उचित मुद्रा व स्थिति में रखने पर कार्यकर्ता को थकान कम होगी साथ ही शारीरिक शक्ति भी कम व्यय होगी।

❖ कार्य हमेशा लय में करना चाहिए यानि कि शरीर को एक ही लय में दोहराना, जैसे एक ही क्रिया लगातार करना।

❖ कार्य करते समय मजबूत व बड़ी मांसपेशियों का प्रयोग करना चाहिए जैसे– भार उठाते समय पैरों व हाथों की मांसपेशियों का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि वे मजबूत होती हैं।

❖ भार उठाते समय उसे शरीर के समीप रखना चाहिए। इससे शक्ति कम व्यय होगी व थकान भी कम होगी।

❖ व्यक्ति को अपने शारीरिक वजन व क्षमता के अनुसार ही भार उठाना चाहिए अन्यथा कई माँसपेशीय व हड्डियों से सम्बन्धित समस्याएँ हो सकती हैं। शोध द्वारा यह सिद्ध हो गया है कि व्यक्ति को अपने वजन का 30 प्रतिशत भार ही उठाना चाहिए।

❖ भारी कार्यों के दौरान व्यक्ति को बीच–बीच में थोड़ा विश्राम करना चाहिए। इससे मांसपेशियों को भी आराम मिलेगा व उनमें उत्पन्न दबाव व तनाव भी कम हो जायेगा। विश्राम बहुत लंबे अंतराल का नहीं होना चाहिए। कार्य के अंत में थोड़ी देर लेटकर आराम करना बहुत फायदेमंद साबित हो सकता है।

❖ इसके अलावा व्यक्ति को पौष्टिक आहार भी उचित मात्रा में लेना चाहिए। अपने भोजन में अनाज, दाल, सब्जियाँ, फल, दूध, दही इत्यादि नियमित रूप से सम्मिलित करने चाहिये। ये सब चीजें शरीर की प्रतिरोध क क्षमता बढ़ाकर व्यक्ति को स्वस्थ रखती हैं व उसे कई रोगों से बचा सकती हैं।

2. यांत्रिक जोखिम :

कृषि कार्यों में जोखिमों का एक और कारण मशीनों पर लापरवाही से काम करना है। ज्यादातर दुर्घटनाएँ ट्रैक्टर, थ्रेशर, रीपर, पानी की मोटर, चॉफ कटर, स्प्रेयर आदि से होती हैं। इनसे चोट लगना, करंट लगना, अंगुलियों का कटना, हाथ या पैर का कटना, गिरना, फिसलना, मोच आना, हड्डी टूटने से लेकर मृत्यु भी संभव है। इसके अलावा ये मशीनें तेज आवाज उत्पन्न करती हैं जिससे कार्यकर्त्ता के कान के पर्दों पर भी प्रभाव पड़ता है और ध्यान नहीं रखने पर व्यक्ति आंशिक या पूर्ण रूप से बहरा हो सकता है। यदि थोड़ी सावधानी बरती जाए तो दुर्घटनाओं एवं बीमारियों से बचा जा सकता है।

मशीनों पर कार्य के दौरान निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए –

❖ मशीन का उपयोग करने से पूर्व उसके बारे में पूरी जानकारी व चलाने का प्रशिक्षण ले लेना चाहिए।

❖ मशीन को चलाने से पहले उसके सभी पुर्जों की जाँच कर लेनी चाहिए व चालक को हेलमेट व जूते आदि पहन लेने चाहिये।

❖ ज्यादातर ट्रैक्टर दुर्घटनाएँ तेज गति से चलाने के कारण होती हैं। ट्रैक्टर के साथ उपयोग में लिये जा रहे उपकरण को ध्यान में रखकर गति निर्धारित करनी चाहिये। मोड़ते समय गति हमेशा कम रखें। ट्रैक्टर बड़ों के लिए बनाया गया है इसे बच्चों को न चलाने दें।

❖ यदि ट्रैक्टर, थ्रेसर या कोई भी मशीन को छोड़ना पड़े तो उसे चलता हुआ न छोड़े। इंजन बंद करके ब्रेक लगा दें व चाबियाँ निकाल लेनी चाहिये।

❖चलती मशीन में तेल या पेट्रोल न डालें। अगर मशीन में अवरोध आ जाये तो मशीन बंद करके ही अवरोध हटायें।

❖ चलती हुई मशीनों पर नहीं चढ़ना चाहिये।

❖ बिजली से चलने वाली मशीनों को ठीक करते समय हाथ में रबर के दस्ताने व पैरों में जूते–चप्पल पहन कर रखें। इससे करंट लगने की संभावनाएँ बहुत कम हो जाती हैं।

❖ मशीनों की तेज आवाज से कानों को बचाने के लिये कपड़े या ईयर प्लग से अच्छी तरह ढक लें। इससे शोर का अहसास कम हो जाता है।

❖ फसल की गहाई करते समय नाक पर भी कपड़ा ढक लें अन्यथा भूसे के कण साँस के साथ फेफड़ों में जाकर कई व्याधियाँ उत्पन्न कर सकते हैं।

❖ मशीनों पर कार्य करते समय अपने कपड़ों व बालों का ध्यान रखें। ज्यादा ढीले वस्त्र न पहने अन्यथा वे उड़कर मशीन के किसी भी हिस्से में फंस सकते हैं और शरीर का कोई भी अंग चोटग्रस्त हो सकता है या कट सकता है। बालों को भी अच्छी तरह बांध कर रखना चाहिए।

❖ मशीनों के समय–समय पर रखरखाव से अचानक होने वाली दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है।

❖ थकान होने पर मशीन, ट्रैक्टर, थ्रेसर आदि पर कार्य नहीं करें। इससे दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है।

❖ नशीले पदार्थों के सेवन के पश्चात् कोई भी मशीन नहीं चलाये अन्यथा आपकी जान जोखिम में पड़ सकती है।

❖ बच्चे व अन्य व्यक्ति जो कार्य में सहयोग नहीं कर रहे हों, को मशीनों से दूर रखें।

अतः जरूरी है कि व्यक्ति मशीनों पर कार्य के दौरान सतर्क रहे व संभावित जोखिमों की जानकारी स्वयं भी रखे व कार्यकर्ताओं को भी बताएँ। ऐसा करने पर वह स्वस्थ एवं सुरक्षित रह सकता है और दुर्घटनाओं व बीमारियों पर होने वाले खर्च को भी बचा सकता है।

यांत्रिक जोखिमों से बचने के लिये कृषक को कृषि कार्यों के लिए उन्नत तकनीक के उपकरण व औजारों का उपयोग करना चाहिये। इनसे श्रम साध्य कार्यों को आसान बनाया जा सकता है। इनके प्रयोग से व्यक्ति कई माँसपेशीय संबंधी समस्याओं से छुटकारा पा सकता है और समय व श्रम दोनों की ही बचत कर सकता है। ऐसे ही कुछ सरल और उपयोगी उपकरण निम्न हैं :–

अ फसल कटाई के लिए उन्नत दरांती का प्रयोग करना चाहिए। यह वजन में हल्की होती है व ब्लेड भी दांतेदार व लम्बी होती है। इससे कम समय में ज्यादा कटाई की जा सकती है। कम वजन के कारण काम करना आसान लगता है और हाथ की अंगुलियों में तनाव नहीं होता है।

अ मक्की के दाने निकालने के लिए नलीदार मक्की छीलक एवं पैडल व हाथ से चलाने वाला मक्की थ्रेसर उपलब्ध है। डण्डे से कूट कर मक्का के दानें निकालने के कार्य में थकान तो होती ही है साथ ही भूसा भी उड़कर साँस द्वारा फेफड़ों में जाता है, दाने भी टूट जाते है। यदि हाथ से भुट्टों को रगड़कर दाने निकालते है तो समय व श्रम अधिक लगता है। हाथ व अंगुलियों की चमड़ी कट–फट जाती है। मक्की छीलक के उपयोग से कोई परेशानी नहीं होती व कार्य भी जल्दी हो जाता है।

अ कृषकों के लिए निराई–गुड़ाई व खरपतवार निकालने का कार्य कमरतोड़ मेहनत वाला होता है। इस कार्य को पारम्परिक तरीके से हाथ या कुदाली से घंटों झुककर किया जाता है। इस हेतु निराई–गुड़ाई का यंत्र वीडर एक वरदान है। यदि बुवाई कतार में की गई हो तो फसलों के बीच से खरपतवार निकालने के लिए पहियों वाली खुरपी–वीडर का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके प्रयोग से समय व श्रम कम लगेगा। झुकना नहीं पड़ेगा जिससे गर्दन, कंधे व कमर के दर्द से भी छुटकारा मिलेगा।

अ यदि मूंगफली के दानें निकालने हो तो मूंगफली छीलक (डिकोर्टिकेटर) का प्रयोग करना चाहिए। मूंगफली को हाथ से तोड़कर दाने निकालने से अंगुलियों में जख्म होने की संभावना रहती है, समय भी अधिक लगता है। इस मशीन से एक घंटे में 15–20 किलो मूंगफली के दाने बिना थकान के झट–पट निकाले जा सकते है।

अ अनाज व दालों की सफाई हेतु लटकाने वाली छलनी या पैडल से चलने वाली छलनी का उपयोग करने से कम श्रम व समय में अधिक कार्य किया जा सकता है। इसमें अलग–अलग छिद्रों वाली जालियां लगाई जा सकती हैं और कचरा व छोटे व टूटे हुए दानों को अलग किया जा सकता है। यही कार्य यदि हाथों से किया जाए तो कई दिन व घंटे लग जाते है।

अ इसके अलावा एक उपयोगी यंत्र है भिंड़ी या बैंगन तोड़ने की कैंची। यदि हाथ से भिंड़ी या बैंगन तोड़े जाए तो हाथ में खुजली व घाव हो जाते है। इस उपकरण की सहायता से भिंड़ी या बैंगन या अन्य कांटेदार सब्जियों को तोड़ने का कार्य हाथ की त्वचा को बिना नुकसान पहुंचाए किया जा सकता है।

3. रसायनिक जोखिमः

कृषक फसल की अच्छी उपज के लिए उर्वरक, कीटनाशक दवाएं व अन्य रसायनों का भरपूर उपयोग करता है। इनके प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिए नहीं तो यह साँस द्वारा, चमड़ी द्वारा या खाने के साथ शरीर में पहुँच कर कई समस्याएं उत्पन्न कर देते हैं। कई रसायनों से हाथ व पैरों की चमड़ी में जलन होने लगती है, छाले या घाव हो जाते हैं। कुछ रसायन ऐसे भी होते है जिनमें से गैस निकलती है जो साँस के साथ शरीर के अंदर जा सकती है व आंख, नाक व मुँह में जलन पैदा कर सकती है। इससे जी घबराना, बेहोशी व अधिक होने पर दम घुटने से मौत भी हो सकती है।

कृषि रसायनों के सुरक्षित उपयोग के लिये निम्न आवश्यक सावधानियाँ रखें :–

● डिब्बे पर लगे लेबल को ध्यान से पढ़कर विषैलेपन की जानकारी रखनी चाहिये।

● दवा सही एवं सिफारिश मात्रा में ही लेनी चाहिये जिससे वह व्यर्थ न जाये।

● हाथ में रबर के दस्ताने, पैरों में जूते, रबर का कोट, चश्मा व आवश्यक होने पर गैस मास्क पहन लेना चाहिए।

● घोल बनाने के लिये लकड़ी का प्रयोग करना चाहिये एवं घाव वाला शरीर का कोई भी हिस्सा रसायन के सम्पर्क में न लायें।

● स्प्रेयर की नोजल को मुँह से साफ करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये।

● खाने से पूर्व वस्त्र बदल कर हाथ, पैर, मुँह आदि साबुन से अच्छी तरह से धो लेने चाहिए।

● रसायन छिड़काव के समय पहने हुए कपड़ों को भी साबुन व पानी से अच्छी तरह धोने चाहिये।

● कृषि रसायन काम में लेते समय यदि जहर का प्रभाव शरीर पर हो तो तुरन्त डॉक्टर के पास जायें तथा रसायन का डिब्बा व पत्रक भी साथ ले जायें।

● खाली डिब्बों को नष्ट करके पानी के स्त्रोत से दूर जमीन में गाड़ दें। इनका उपयोग पानी व खाद्य पदार्थों को रखने के लिये नहीं करना चाहिये।

● रसायनों को बच्चों से पहुँच से दूर रखें।

कृषि रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से न केवल कृषक व उसके परिवार का स्वास्थ्य अपितु उसके पूरे समाज का स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। साथ ही मिट्टी की प्राकृतिक गुणवत्ता भी कम हो रही है। इसलिए वैज्ञानिक जैविक खाद जैसे–हरी खाद, गोबर से बनी हुई खाद, वर्मी खाद आदि के उपयोग एवं नीम से बनी हुई दवाओं के प्रयोग की सलाह दे रहे है। आप भी जैविक खाद का व दवाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करें। स्वयं भी सुरक्षित रहे और दूसरों को भी स्वस्थ एवं सुरक्षित रखें।

4. वातावरणीय जोखिम :

कृषक का कार्य वातावरण भी कई जोखिमों का कारण हो सकता है। वातावरण से तात्पर्य सिर्फ गर्मी, सर्दी या बरसात से ही नहीं है वरन् वे सभी चीजों से है जिसके सम्पर्क में कृषक प्रतिदिन आता है जैसे खेत की मिट्टी, आस–पास के पेड़–पौधे, कीट–पतंगे, साँप–बिच्छु इत्यादि।

अत्यधिक गर्मी में कार्य करने से व्यक्ति को कई जोखिमों का सामना करना पड़ता है जैसे लू लगना, उल्टी–दस्त, जी घबराना, चमड़ी झुलसना, चर्म रोग आदि। गर्मी में कार्य करें तो –

● जितना अधिक हो सके पानी व छाछ पीये क्योंकि पसीने के कारण शरीर में पानी की कमी हो जाती है व व्यक्ति अस्वस्थ हो सकता है।

● लम्बे समय तक लगातार गर्म वातावरण में कार्य नहीं करना चाहिये। कार्य के बीच–बीच में, छाया में थोड़ा विश्राम करना चाहिये।

● सिर, गर्दन व बाहों को कपड़ों से ढककर रखें इससे चमड़ी झुलसेगी नहीं। गर्मी में हमेशा सूती वस्त्रों का ही प्रयोग करें क्योंकि ये आसानी से पसीना सोख लेते हैं।

● अधिक गर्म वातावरण हो तो कार्य का समय सुबह या शाम रखना चाहिए।

ऐसे ही सर्दी के मौसम में भी स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। अत्यधिक सर्दी में कार्य करने पर व्यक्ति को बुखार, जुकाम, अस्थमा आदि होने की संभावनाएँ रहती है। सर्दी से बचाव के लिए –

● उचित वस्त्र पहनकर ही खेतों पर जाएँ या कार्य करें।

● यदि पानी में कार्य करना है तो पाँव में जूते पहन लें इससे ठंड नहीं लगेगी।

● ठंडे मौसम में कार्य समय दिन का या धूप निकलने के बाद रखना चाहिए।

बरसात के मौसम में भी अपने सिर व शरीर को बचाना चाहिए। बरसात में जूते–चप्पल पहनकर ही खेतों में जाएँ अन्यथा जीव–जन्तु के काटने का डर रहता है। जब साँप–बिच्छु किसी व्यक्ति को काट खाये तो तुरन्त कटे हुए स्थान के ऊपर कपड़े की पट्टी कसकर बाँध दें व डॉक्टर को दिखाएँ। यदि कीट–पतंगे काट खायें तो तुरन्त स्वच्छ पानी से धो लें, अगर डंक हो तो लोहे की चाबी या कोई भी लोहे की चीज रगड़ देनी चाहिये।

कई बार आस–पास उगने वाले जंगली पेड़–पौधे से भी व्यक्ति को एलर्जी हो जाती है। ऐसे पौधों को पहचान कर उखाड़ कर जला दें। अगर खेत के ऊपर से बिजली के तार जा रह हों तो सावधानी रखें। खेत पर कुआँ हो तो उसकी मुण्डेर अवश्य बना दें नहीं तो किसी के गिरने का डर रहेगा।

कार्य वातावरण का यदि ध्यान रखा जाए तो इससे होने वाले जोखिमों से बचाव हो सकता है। कार्य समय में बदलाव, कार्य के दौरान विश्राम, खेतों में जीव–जन्तुओं का ज्ञान व सावधानियाँ रखने से कृषक सुरक्षित व स्वस्थ रह सकता है।

अगर मानव सतर्क रहे तो जोखिमों से अपना बचाव कर सकता है। इसके लिये ये खास–खास बातें ध्यान में रखनी चाहिये :–

1. उचित मुद्रा में कार्य करें।
2. शारीरिक क्षमता के अनुसार वजन उठाये।
3. शोर से कानों को बचाये।
4. मशीनों पर कार्य करते समय सावधान रहे।
5. उचित कार्य विधियां अपनाये।
6. उन्नत कृषि यंत्रों का प्रयोग करें।
7. कार्य के दौरान उचित विश्राम करें।
8. पौष्टिक आहार लें।
9. रसायनों का सुरक्षित प्रयोग करें।
10. कार्य वातावरण का ध्यान रखें।

● उन्नत यंत्र अपनाओ, सुरक्षा बढ़ाओ, लाभ कमाओ।

● अज्ञानता, अनभिज्ञता का अभिशाप/श्राप मिटाओ, खेती में सुरक्षा की ज्योत जलाओ।

● उचित मुद्रा में काम करो, शारीरिक जोखिम दूर करो।

● सही भार/वजन उठाओ, कमार बचाओ, सुरक्षा लाओ।

● सौ जोखिमों का एक उपचार, लापरवाही को करो तड़ीपार।

● सौ जोखिमों की एक ही चाबी – लापरवाही।

● रासायनिक खेती से करो तौबा।

● जो भूमि माँ को बचाना है, रासायनिक खेती को भुलाना है।

● जैविक खेती अपनायेंगे, भूमि माँ की रंगत वापस लायेंगे।

● सभी कृषकों/किसानों की एक पुकार, सुरक्षित खेती हर–घर–द्वार।

S.S. AGRO (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals

CONTACT NO.-022-6710-3722

EMAIL:aarti@hindchem.com

मंथन

जीवन-हित में पर्यावरण

जीवन जीवस्य भोजनम् के अनुसार कोई जीव किसी का भक्षण करता है तो कोई दूसरा-जीव उसका भक्षण कर जाता है सभी समुचित संख्या में पृथ्वी पर उत्पन्न होते रहें, ताकि खाद्य-श्रृंखलाएं सुचारू रूप से चलती रहे। इसके लिए समस्त जीवों का संरक्षण करना मनुष्य का कर्तव्य है, तभी मनुष्य का अस्तित्व बचा रह सकता है। मनुष्य के लिए जीव हत्या पाप माना गया है। मनुष्य अप्राकृतिक रूप से तो सर्वभक्षी है, वह सभी श्रेणी के जीव-जंतुओं को खा सकता है, लेकिन शारीरिक संरचना और प्राकृतिक स्वभाव के अनुसार वह शुद्ध शाकाहारी है।आज पर्यावरण का संरक्षण जरूरी ही नहीं, बल्कि अति आवश्यक है, हमें आज पर्यावरण संरक्षण के लिए बचपन से ही बच्चों में इस बात की शिक्षा देने की जरूरत है।

जैसे गाय, भैंस, बकरी, भेड़, हाथी, ऊंट, खरगोश, बंदर ये सभी प्रथम श्रेणी के उपभोक्ता कहलाते हैं। प्रथम श्रेणी के उपभोक्ताओं को भोजन के रूप में खाने वाले जंतु मांसाहारी होते हैं और ये द्वितीय श्रेणी के उपभोक्ता कहलाते हैं। इसी प्रकार द्वितीय श्रेणी के उपभोक्ताओं को खाने वाले जंतु तृतीय श्रेणी के उपभोक्ता कहलाते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि ऊर्जा का प्रवाह सूर्य से हरे-भरे पौधों में, हरे पौधों से प्रथम श्रेणी के उपभोक्ताओं में और प्रथम श्रेणी के उपभोक्ताओं से द्वितीय श्रेणी के उपभोक्ताओं में और फिर उनसे तृतीय श्रेणी के उपभोक्ताओं की ओर होता है। सभी पौधे और जंतु वे चाहे किसी भी श्रेणी के हों, मरते अवश्य हैं। मरे हुए पौधे व जंतुओं को सड़ा-गलाकर नष्ट करने का कार्य जीवाणु और कवक करते हैं। जीवाणु और कवकों को हम अपघटक कहते हैं।

ऊर्जा के प्रभाव को जब हम पंक्ति के क्रम में रखते हैं तो खाद्य-श्रृंखला बन जाती है। जैसे-हरे पौधे, कीड़े-मकोड़े, सर्प, मोर आदि एक खाद्य-श्रृंखला है। इसमें हरे पौधे उत्पादक कीड़े प्रथम श्रेणी के उपभोक्ता, मेढ़क द्वितीय श्रेणी का उपभोक्ता, सर्प तृतीय श्रेणी का उपभोक्ता एवं मोर चतुर्थ श्रेणी का उपभोक्ता है। इसी प्रकार की बहुत-सी खाद्य श्रृंखलाएं विभिन्न परितंत्रों में पाई जाती हैं। जिसका प्राथमिक ज्ञान सभी वर्गों में होना जरूरी है ताकि हम प्रकृति के बनाए नियमों में चलकर इन प्रकार की खाद्य श्रृंखलाओं को पढ़ें और जानें ताकि हम अपने आस-पास के वातावरण के संरक्षण में सक्रियतापूर्वक कार्य कर सकें।

प्रकृति की व्यवस्था स्वयं में पूर्ण है। प्रकृति के सारे कार्य एक सुनिश्चित व्यवस्था के अंतर्गत होते रहते हैं, यदि मनुष्य प्रकृति के नियमों का अनुसरण करता है तो उसे पृथ्वी पर जीवनयापन की मूलभूत आवश्यकताओं में कोई कमी नहीं रहती है। मनुष्य का दुष्चिंतन ही है, जो अपने संकीर्ण स्वार्थ के लिए प्रकृति का अति दोहन करता है, जिसके कारण प्रकृति का संतुलन आज डगमगा-सा जाने के कारण मनुष्य का अस्तित्व खतरे में पड़ा हुआ है।

परिणामतः बाढ़, सूखा जैसी आपदाएं भारी जान-माल की हानि पहुचाती हैं। प्रकृति के स्वाभाविक कार्य में कोई बाधा न डाली जाए और न ही छेड़छाड़ की जाए तो ही पर्यावरण को हम सुरक्षित रख सकते हैं।

बहुत से जीव-जंतु हमें बिल्कुल अनुपयोगी और हानिकारक प्रतीत होते हैं, लेकिन वे खाद्य श्रृंखला की प्रमुख कड़ी हैं और उनका पर्यावरण के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान होता है। जैसे कीड़े-मकोड़े, पौधों के तनों और पत्तियों को खाकर फसलों को बहुत अधिक हानि पहुंचाते हैं, ये पक्षियों का भोजन बनकर पक्षियों से फसल को सुरक्षित रखते हैं और पक्षी इन कीड़ों को खाकर कीड़ों से फसल की रक्षा करते हैं। इन कीड़ों के अभाव में पक्षी फसलों को अपेक्षाकृत अधिक हानि पहुंचा सकते हैं।

इसी प्रकार सांप मनुष्य को बड़ा हानिकारक और खतरनाक दिखाई देता है, लेकिन यह एक खाद्य श्रृंखला का महत्वपूर्ण अंग होने के कारण मानव जाति के लिए बड़ा उपयोगी है और किसानों का मित्र भी है। चूहा किसानों का शत्रु है, जो बहुत मात्रा में अन्न को खाकर बर्बाद कर देता है। सांप चूहों को खाकर उनकी संख्या को नियंत्रित करता रहता है। यदि खेतों में सांप न होते तो चूहों की संख्या इतनी अधिक हो जाती कि ये सारी फसल खा जाते। घास के मैदान में फुदकने वाला मेढ़क व्यर्थ का जंतु प्रतीत होता है, किंतु मक्खी-मच्छरों को खाकर पर्यावरण के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि खाद्य श्रृंखला को तोड़ने पर मनुष्य को हानि-ही-हानि होती है। इससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता है। यह तो रही वन और कृषि योग्य भूमि के परतंत्र की शैक्षिक एवं ज्ञानवर्धक बातें।

पर्यावरण से संबंधित तथ्यात्मक जानकारी एवं संरक्षण के विभिन्न उपायों को आज प्राथमिक सहित उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में जोड़ा जाना नितांत आवश्यक है, ताकि शिक्षकों एवं छात्रों सहित पालकों की शैक्षिक सहभागिता है पर्यावरण का संरक्षण किया जा सके।

ऋतु कपिल
कार्यकारी संपादक

हल्दी उत्पादन तकनीक

डॉ. राकेश कुमार शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी)
डॉ. स्वप्निल दुबे
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

हल्दी (Curcuma longa L) एक जिन्जीबरेशी कुल का पौधा है। इसका उपयोग विभिन्न प्रकार की औषधियों, मसाला, रंग सामग्री, उबटन एवं विभिन्न धार्मानुष्ठानों में किया जाता है। हल्दी की उत्पत्ति स्थान भारत ही माना जाता है। भारत, विश्व में हल्दी का सबसे बड़ा उत्पादक एवं उपभोक्ता देश है।

जलवायुः– हल्दी की फसल के लिये गर्म एवं तर जलवायु की आवश्यकता होती है। हल्दी की बुवाई, अंकुरण एवं जमाव के समय अपेक्षाकृत कम वर्षा एवं पौधों में वृद्धि के समय अधिक वर्षा उपयुक्त रहती है। इसकी खेती हेतु 20–25 डिग्री सेंटीग्रेड और वार्षिक वर्षा 1500 मि.मी. आवश्यक है।

मिट्टीः– इसकी खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टी जैसे– रेतीली, मटियार, दोमट मिट्टी में की जा सकती है। लेकिन जल निकास युक्त दोमट मिट्टी इसकी खेती के लिये उपयुक्त है। जिसका पी. एच. मान 4.5 – 7.5 होना चाहिये।

खेत की तैयारीः– खेत की गहरी जुताई करके खेत की अच्छी तैयारी कर लेनी चाहिये ताकि मिट्टी भुरभुरी हो सके जिससे गांठो का विकास अच्छा हो सके। 50 सेमी की दूरी पर मेढ बनायी जाती है।

बुवाई का समयः– जलवायु, किस्म एवं सिंचाई की सुविधानुसार इसकी बुवाई 15 मई से 15 जून के मध्य की जा सकती है।

बीज की मात्राः– बीज की मात्रा, बुवाई की विधि एवं गांठो के आकार पर निर्भर करती है। हल्दी की बुवाई हेतु 20–25 क्विंटल/हैक्टेयर गांठो की आवश्यकता होती है।

बीजोपचारः– मैंकोजैब 3 ग्राम/लीटर या रीडोमिल 3 ग्राम/लीटर पानी के घोल में कंदो को 30 मिनट तक डुबोकर रखें। सुखाने के बाद बुवाई के काम में लें।

बुवाईः– बुवाई हेतु हल्दी की सुविकसित गांठों वाले कंदों का प्रयोग करते हैं। बुवाई मेढ बनाकर करते है। कतार से कतार की दूरी 50–60 सेंमी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 25 से.मी. रखनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरकः– खेत की तैयारी के समय 40 टन/हैक्टेयर गोबर की सड़ी खाद का प्रयोग करना चाहिए। हल्दी हेतु 60 किग्रा. नत्रजन, 50 किग्रा फॉस्फोरस व 120 किग्रा पोटाश प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता होती है। फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय दे दें। तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के 40 दिन बाद एवं शेष आधी मात्रा 90 दिन वाद खेत में डालें। बुवाई के तुरंत बाद सूखे पत्तों से खेत में पलवार ;डनसबीद्ध बिछा देना चाहिए।

सिंचाई एवं निंदाई गुड़ाईः– पहली सिंचाई बुवाई के तुरंत बाद तथा इसके बाद आवश्यकतानुसार सिंचाई की जा सकती है। खेत में आवश्यकतानुसार 40 दिन व 90 दिन पर निंदाई गुड़ाई करके पौधों पर मिट्टी चढ़ानी चाहिए।

उन्नत किस्मेंः–

क्र.	प्रजाति	औसत उपज (टन/है)	फसल अवधि (दिन)	सूखे प्राप्ति (:)	कुरकुमिन (:)	ओलिओरिसिन (:)	एसनशियल ओयल (:)
1	सुवर्णा	17.4	200	20.0	4.3	13.5	7.0
2	सुगुणा	29.3	190	12.0	7.3	13.5	6.0
3	सुदर्शना	28.8	190	12.0	5.3	15.0	7.0
4	कृष्णा	9.2	240	16.4	2.8	3.8	2.0
5	सुगन्धम	15.0	210	23.3	3.1	11.0	2.7
6	रोमा	20.7	250	31.0	9.3	13.2	4.2
7	सुरोमा	20.0	255	26.0	9.3	13.1	4.4
8	रंगा	29.0	250	24.8	6.3	13.5	4.4
9	रश्मि	31.3	240	23.0	6.4	13.4	4.4

पौध संरक्षण
प्रमुख रोग एवं नियंत्रणः–

1. प्रकंद गलनः– इस रोग में प्ररोह का कॉलर स्थान कोमल एवं पनीला होकर सड़ जाता है, तथा यह बीमारी प्रकंदों तक फैल जाती है जिससे प्रकंद भी सड़ने लगती हैं। रोग ग्रस्त पौधों की पत्तियां पीली पड़कर सूखने लगती हैं।

नियंत्रणः–

अ बुवाई हेतु स्वस्थ एवं रोग मुक्त बीज प्रकंदों का प्रयोग करें।

अ जल निकास की उचित व्यवस्था करें।

अ भंडारण तथा बुवाई से पहले प्रकंदों को रीडोमिल 3 ग्राम/लीटर पानी के घोल से 40 मिनट तक उपचारित करें।

अ रोग ग्रस्त पौधों को निकाल कर रीडोमिल 3 ग्राम/लीटर या मैन्कोजैब 2 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर ड्रेंचिंग करें।

2. पत्ती धब्बा रोगः– पौधों की नीचली पत्तियों पर जलीय धब्बे बन जाते हैं तथा पत्तियां पीली पड़ जाती हैं। उपज में कमी हो जाती है।

नियंत्रणः– इस रोग की रोकथाम हेतु मैन्कोजेब 2 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

प्रमुख कीट एवं नियंत्रणः–

1. राइजोम स्केलः– इस कीट के वयस्क एवं लार्वा प्रकंदों का रस चूसते हैं, जिससे अंकुरण क्षमता कम हो जाती है। इस कीट का प्रकोप भण्डारण एवं खेत दोनो परिस्थिति में होता है।

नियंत्रणः– भण्डारण एवं बुवाई से पहले प्रकंदों को क्विनॉलफॉस 1 मिली/लीटर या डाइमिथोऐट 1 मिली/लीटर पानी के घोल से उपचारित करें।

2. तना छेदकः– इस कीट का लार्वा प्ररोह या प्रकंदों में छेद कर प्रवेश कर जाता है, जिससे प्ररोह धीरे धीरे पीला पड़कर सूख जाता है।

नियंत्रणः– मैलाथियान या डाइमिथोऐट 1.5 मिली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

3. थ्रिप्सः– ये कीट पत्तियों का रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं।

नियंत्रणः– डाइमिथोऐट 1.5 मिली/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

खुदाई एवं उपजः– हल्दी की फसल 7 से 9 महिने में जब पत्तियां पीली होकर सूखने लगें तो खोदने लायक हो जाती है। खुदाई करते समय ध्यान रखें कि प्रकंद न कटें, न छिलें और न ही भूमि में रहें। कटाई के समय खेत में नमी न हो तो हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। प्रकंदों को निकालने के बाद ऊपर की पत्तियां आदि काट कर अलग कर देतें हैं व प्रकंदो को पानी से धोकर साफ कर देतें हैं। प्रकंदो की औसत उपज 200 से 300 क्विंटल/हैक्टेयर प्राप्त हो जाती है। इसकी सूखी हल्दी किस्म के अनुसार 15–30 प्रतिशत तक प्राप्त होती है।

हल्दी का प्रक्रियाकरण ; Processing & curing of Turmeric)

1. हल्दी को उबालनाः– प्रकंद पुंज से गांठों को अलग करके उनको 1 घंटे तक पानी में उबाला जाता है। उबालते समय सोडियम बाईकार्बोनेट या सोडियम कार्बोनेट 100 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में उपयोग किया जाता है। उबालने के लिए गैल्बनाइज्ड तांबा या लोहे की कड़ाई या मिट्टी के पात्रों का प्रयोग किया जा सकता है।

2. सुखानाः– उबले हुऐ कंदों को घास की चटाई या दरी आदि पर 5–7 सेमी मोटी परत बनाकर 10–15 दिनों तक धूप में सुखाया जाता है। किस्म के अनुसार सूखने पर हल्दी 15–30 प्रतिशत रह जाती है।

3. हल्दी की पॉलिशिंगः– सूखने के बाद प्राप्त हल्दी ज्यादा लुभावनी नहीं लगती है अतः इसके बाहरी आवरण को चमकाया जाता है। हल्दी की पॉलिशिंग हेतु मानवीय विधि के तहत कंकरीट के फर्श पर इनको रगड़ा जाता है। हल्दी की पॉलिशिंग हेतु घुमावदार ड्रम प्रयोग किये जाते हैं। इसके लिए हस्त चलित या मशीनों से चलाये जाने वाले ड्रम/पॉलिशर भी प्रचलन में हैं। इन ड्रमों को घुमाने से हल्दी की गांठें आपस में घर्षण करती हैं जिससे पॉलिश की प्रक्रिया पूर्ण होती है।

4. हल्दी की रंगाईः– हल्दी का अच्छा मूल्य लेने के लिए अच्छा रंग आवश्यक है, इसके लिए पॉलिशिंग के आखिरी चरण में हल्दी की सूखी गांठों में 2 किग्रा/क्विंटल की दर से हल्दी पाऊडर मिलाया जाता है। तैयार हल्दी को बोरे में भरकर नमी रहित गोदाम में रख देते हैं।

बीज प्रकंदो का भण्डारणः– बीज प्रकंदों का भण्डारण हवादार कमरों में पत्तों से ढंककर करते हैं। बीज राइजोम को गड्डों में लकड़ी का बुरादा, रेत आदि रखकर भी भण्डारण किया जा सकता है। इन गड्डों को लकड़ी के फंटों से ढंक देते हैं। स्केल ग्रसित प्रकंदों को 15 मिनट तक क्विनॉलफॉस 2 मिली/लीटर पानी तथा कवक ग्रसित राइजोम को मैन्कोजैब या रीडोमिल 3 ग्राम/लीटर पानी के घोल से उपचारित करने के बाद भण्डारण करते हैं।

(पाक्षिक राशि फल)
01–05–2014 से
15–05–2014

ज्योतिषाचार्य -पं.जयदत्त व्यास -जयपुर

AJS	उत्तम समय ,धन लाभ ,यश व्रद्धी का योग बनता है !
BKT	सम्मान ,धन लाभ , मित्रो द्वारा सहयोग कई प्रकार के लाभ
CLU	यात्रा योग ,अधिकारियों द्वारा कष्ट ,धन लाभ का योग बनता है!
DMV	धन हानि , विरोधी प्रबल, कष्ट पूर्ण समय !
NEW	आर्थिक मानसिक कष्ट , व्यापार मे नुकसान की संभावना
FOX	शारीरिक कष्ट , उद्देगन पूर्ण समय , सावधानी रखें
GPY	समय कष्ट कारक मानसिक तनाव,धन हानि योग
HQZ	परिवारिक आर्थिक. मानसिक कष्ट , विरोधी प्रबल
IR	भाईबंधुओ मे विरोध , रक्त पीड़ा, मानसिक कष्ट !

क्या आप जानते हैं ?

प्रश्न १. पोजोलाना क्या है ?

उत्तर. पोजोलाना एक प्राकृतिक अथवा कृत्रिम सामग्री है जिसमें सिलिका अभिक्रियाशील रूप में पाई जाती है । दूसरे शब्दों में , पोजोलाना एक सिलीसियस अथवा सिलिसियस एवं एलूमिनियस सामग्री है जिसमें इसके अपने बहुत कम अथवा नगण्य संयोजी गुणधर्म होते हैं परन्तु महीन रूप से विभावित रूप में, आर्द्रता की उपस्थिति में यह रासायनिक रूप से प्रतिक्रिया करती है जिससे कंक्रीट के विशिष्ट गुणधर्म आ जाते हैं । फ्लाईऐश, माइक्रोसिलिका, राइस-हस्क, जीजीबीएस, मेटाकोलाइन पोजोलोनिक सामग्रियों के कुछ उदाहरण हैं ।

सुविचार

- **जल्दी सोना और जल्दी उठना इंसान को स्वस्थ और बुद्धिमान बनाता है।**
- तुम पानी जैसे बनो
  जो अपना रास्ता खुद बनाता है।
  पत्थर जैसे ना बनो जो
  दूसरों का रास्ता भी रोक लेता है।

सूचना

पाक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों व लेख़ो में समाविष्ट सभी बातों की जाँच-परखकर पाना सँभव नही है विज्ञापनों में अपने उत्पादनों अथवा अपनी सेवाओं के बारे में विज्ञापनदाता जो दावे करते है ,सृष्टि एग्रो समाचारपात्र उसकी कोई गारंटी नही लेता. विज्ञापनों में किए गए दावो की पूर्ति यदि विज्ञापनदाता द्वरा नही होती है तो उसके लिए पाक्षिक सृष्टि एग्रो समाचारपत्र समूह के मुद्रा , संपादक ,प्रकाशक व मालिक किसी भी रूप में जवाबदेह नही होंगे,कृपया इसे ध्यान में रखे. अत: हम पाठकों से अनुरोध करते है कि विज्ञापन में उल्लेखित बातों के संदर्भ में कोई भी करार करने के पूर्व उसके बारे में आवश्यक छानबीन कर ले.

गेहूं की आवक में गिरावट

फरीदाबाद : दिन शनिवार दोपहर के एक बजे हैं। अनाज मंडी सेक्टर-16 फरीदाबाद में मौसम खराब होने के कारण गेहूं की आवक सिर्फ 250 क्विंटल हुई है। यहां पर अन्य मंडियों की तरह से गेहूं ढुलाई न होने की कोई समस्या नहीं है। गेहूं का उठान लगातार किया जा रहा है। यहां पर आढ़तियों की स्थायी दुकान नहीं है। ये खुले आसमान के नीचे बैठ कर गेहूं की सरकारी खरीद करते हैं। यदि बारिश आ जाए तो किसान और आढ़ती चाय के खोखे वालों की तिरपाल के नीचे जाकर छुपते हैं। आढ़ती मुनीष मित्ताल बताते हैं कि यदि मंडी में मार्केट कमेटी दुकान बनाने के लिए जगह दे दे तो वे भी बल्लभगढ़ मंडी की तरह से स्थायी आढ़त बनाना चाहते हैं। स्थायी आढ़त न होने से किसान भी गेहूं कम लेकर आते हैं और चावल की खरीद तो यहां पर होती ही नहीं। वे चावल की खरीद भी करना चाहते हैं। आढ़ती संदीप बताते हैं कि फरीदाबाद अनाज मंडी शहर के अंदर थी। वहीं पर पुरानी आढ़त बनी हुई हैं। अब वहां पर जगह नहीं बची। इसलिए सेक्टर-16 सब्जी मंडी के पास गेहूं की खरीद के लिए जगह दी हुई है। मंडी की सड़क भी अभी तक नहीं बनाई गई हैं। रात के समय तो यहां पर स्ट्रीट लाइट भी नहीं जलती हैं। यदि आढ़त बन जाएंगी तो फिर स्ट्रीट लाइट भी मार्केट कमेटी लगा देगी। गांव महावतपुर से मंडी में अनाज बेचने आए किसान चाय वाले के पास बैठे हुए बतिया रहे हैं कि फरीदाबाद की सेक्टर-16 मंडी को भी बल्लभगढ़ अनाज मंडी की तरह से विकसित किया जाना चाहिए। क्योंकि बल्लभगढ़ और मोहना मंडी में गेहूं, धान की खरीद के दौरान काफी भीड़ होती है। वहां पर किसानों के लिए फसल खाली करने के लिए जगह ही नहीं बचती । इसी दौरान कर्ण सिंह कहते हैं कि अब फरीदाबाद में खेत खलिहान वैसे भी कम हो गया है। इसलिए भी यहां पर गेहूं की आवक काफी कम हो गई है। फसल भी अंतिम पड़ाव में पहुंच गई है। तिगांव में भी अनाज मंडी है। वहां पर बड़ी मंडी बनाई गई है। इसलिए अब काफी किसान वहीं पर अपनी फसल को बेच देते हैं। तिगांव मंडी में आढ़त भी पक्की बनाई गई हैं। जगपाल सिंह का कहना है कि काफी लोग अपनी फसल को अब दिल्ली नरेला भी ले जाते हैं। इसलिए भी सेक्टर-16 मंडी में गेहूं की आवक कम हो गई है।

सुरक्षित अनाज भण्डारण पर प्रशिक्षण

डॉ. पंकज शर्मा

जयपुर : कृषि विज्ञान केंद्र, बानसूर के प्रभारी एव वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पंकज शर्मा ने निमुचाना गांव में सुरक्षित अनाज भण्डारण के बारे में ग्रामीण कृषकों एव महिलाओं को विस्तार से प्रशिक्षण दिया।उन्होंने बताया की भण्डारगृह अथवा कोठी की ठीक से सफाई करवेा गेहू में ऐल्युमिनियम फास्फाईड का एव पाहुच 10 बोरी की अनाज की दर से रखे एव इसके बाद भण्डार गृह को ठीक से सीलबंद कर देने से अनाज सुरक्षित रहता है। डॉ. शर्मा ने कहा की भण्डारण में कीटनाशी रखने का यह उपयुक्त समय है, ताकि वर्ष आने पर आगामी दिनों में आद्रता बढ़ने पर अनाज में - कीटों के प्रकोप से बचा जा सकेगा।

डॉ.शर्मा ने खरीफ फ़सनो की बुवाई से पूर्व मिटटी की जाँच करने की सलाह दी।उन्होंने मिट्टी के नमूने लेने के तरीके को विस्तार से समझाया

व गर्मियों में नीम की निम्बोली एकत्र करने की सलाह उन्होंने किसानों व महिलाओं को कृषि विज्ञान के उद्देश्यों एव के बारे में भी जानकारी दी।इस प्रशिक्षण में केन्द्र के बच्चू सिंह सहित 35 कृषकों एव महिलाओं ने भाग लिया।

किसानों को अब तक नहीं बांटी राहत राशि

भोपाल. ओला पीड़ित किसानों को राहत बांटे जाने के लिए एक हजार करोड़ रुपए दिए जा चुके हैं, लेकिन यह राशि किसानों को क्यों नहीं मिल पा रही है। यह सवाल जब मुख्य सचिव अंटोनी डिसा ने जब वीडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिए कलेक्टरों से पूछा तो सामने आया कि 21 जिलों के कलेक्टरों ने सरकार को फसलों के पूरे नुकसान की जानकारी ही नहीं भेजी है।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मुख्यमंत्री शिवराज सिंहचौहान को राहत कार्यों की समीक्षा करना था। चुनाव आयोग से इसकी अनुमति भी मिल चुकी थी, लेकिन उत्तरप्रदेश में चुनावी व्यस्तता के चलते सीएम इस महत्वपूर्ण बैठक में शामिल नहीं हो सके।

सीएस ने कलेक्टरों को अल्टीमेटम दिया कि हर हालत में फसलों के नुकसान की फुल एंड फायनल जानकारी भिजवा दें। मुख्य सचिव ने जबलपुर कलेक्टर विवेक पोरवाल को ताकीद किया कि उन्होंने फसलों के नुकसान की जो जानकारी भेजी है। वह काफी नहीं है। पूरी जानकारी फार्मेट में भरकर ऑनलाइन भेजें।

सीएस ने कहा कि ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन 8, 9 और 10 अक्टूबर को इंदौर में किया जाएगा। इससे पहले अक्टूबर 2012 में हुई समिट में हुए सभी भूमि आबंटन करार पूरे कर लिए जाएं। जमीन का डायवर्सन, पर्यावरण विभाग की मंजूरी की भी प्रक्रिया पूरी कर ली जाए।

मौसमी बीमारियों के लिए भी एंबुलेंस 108 का इस्तेमाल किया जाए। ओला पीड़ित किसानों की राहत राशि की मांग जल्द भेजे जाएं। गेंहूं खरीदी की राशि किसानों को जल्द दी जाए।

चावल की भूसी का तेल से मक्खन का विकास

चावल की भूसी का तेल से उत्पाद की तरह मक्खन बनाने के लिए अमेरिका में वैज्ञानिक द्वारा विकसित प्रक्रिया भारतीय खाद्य तेल उद्योग के लिए काम में आ सकता है.

मूंगफली का मक्खन जैसी भी छोटा करने का नकली मक्खन मक्खन के लिए एक आंशिक प्रतिस्थापन किया जा सकता है शोध संस्था के कार्यालय में प्रारंभिक प्रयोगों के दौरान, Bakota और उनके सहयोगियों मक्खन ग्रेनोला के लिए (एक नाश्ता मद muesli जैसी) और सफेद रोटी का इस्तेमाल किया.

भारत में चावल की भूसी का तेल और उत्पादों के द्वारा धान उत्पादन ११५ मिलियन टन टॉपिंग के साथ अन्य निर्माण करने के लिए जबरदस्त क्षमता है. वर्तमान में, देश में चावल की भूसी का तेल का उत्पादन १५ लाख टन से अधिक की क्षमता के खिलाफ ९ लाख टन है.

जैसे मक्खन के रूप में नए प्रयोग करता है देश में चावल की भूसी का तेल का अधिक उत्पादक उपयोग में वृद्धि की संभावना है.

ट्रकों के जमावड़े को लेकर लोगों ने किया प्रदर्शन

मोगा एफसीआई रोड पर स्थित एफसीआई के गोदामों में गेंहूं व चावल क ो जमा करवाने के लिए पिछले कई दिनों से सैकंडों

ट्रकों का जमावड़ा सड़क पर लगा रहता है, वहीं ट्रक चालक भी एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ नियमों की उलंघना कर सड़क पर तीन तीन लाइने लगाकर लोगों के लिए बडी परेशानियां खड़ी करते है।

इसी समस्या को लेकर एफसीआई के बाहर मोहल्ला निवासियों ने जाम लगा दिया। रोष प्रदर्शन के दौरान मोहल्ला निवासियों ने बताया कि सड़क पर ट्रकों के जाम के चलते पैदल चलना भी मुशाकिल हो जाता है सड़के भी जगह जगह से टूटी पड़ी है, जिस कारण पूरा दिन सड़क पर धूल मिट्टी उड़ती रहती है। मोहल्ला निवासियों ने कहा कि यहां एक प्राइवेट स्कूल भी है, जिसमें सैकडों बच्चे पढ़ते है। इस कारण बच्चों को स्कूल आने जाने में भारी परेशान का सामना करना पड़ता है।

बर्फबारी और बारिश किसानों के लिए संजीवनी

पधर लगभग दो माह से चल रहे लगातार सूखे के बाद इंद्र देवता आखिर किसानों के लिए मेहरबान हुए। पधर उपमंडल की चौहारघाटी ताजा बर्फबारी से गुलजार हो गई है। चौहारघाटी के निचले क्षेत्रों में ही आधा फुट ताजा हिमपात होने का समाचार है। लंबे अंतराल बाद हुई बारिश से क्षेत्र के लोगों को खासी राहत मिली है। रात भर जारी रिमझिम बारिश से किसानों के चेहरों पर रौनक लौट आई है।

किसानों के मुताबिक यह बारिश गंदम की फसल के लिए सोने से कम नहीं है। चौहारघाटी के ऊंचाई वाले जोतों में रविवार को भी बारिश के साथ साथ दिन भर बर्फ के फाहे गिरते रहे। जिससे समूचा क्षेत्र पूरी तरह ठंड की चपेट में आ गया है। चौहारघाटी के रोशन लाल, काहन सिंह, ओम प्रकाश, राजेंद्र कुमार, हुकम चंद, बिहारी लाल, पवन कुमार और राम लाल के अनुसार घाटी के ऊंचाई वाले थमसर, फुंगणी, लांघा, लोलर, सरूणीभावस और भुभूजोत जहां पहले से ही सफेद चादर ओढ़े हुए है। पधर उपमंडल के किसानों का कहना है कि बारिश और बर्फबारी गंदम की पैदावार के साथ साथ अन्य नगदी फसलों के लिए किसी संजीवनी से कम नहीं है।

शाहकोट दानामंडी में सुविधाओं की कमी

शाहकोट : कुछ दिनों से कस्बे की दानामंडी में गेहूं की आमद शुरू हो गई है, वहीं मार्केट कमेटी द्वारा गेहूं की खरीद संबंधी सभी प्रबंध करने का दावा किया जा रहा है। इन दावों की असल सच्चाई का पता करने के लिए जब जागरण टीम द्वारा दानामंडी का दौरा किया गया तो देखा कि गेहूं के ढेर बरसात के पानी के नजदीक ही लगे हुए थे। दानामंडी में फैली गंदगी और खड़े बरसात के पानी के कारण उड़ती बदबू मानो प्रशासन के दावों की पोल खोल रही थी। इस मौके मौजूद कुछ किसानों ने बताया कि दानामंडी में प्रबंध कुछ अच्छे नहीं हैं। न तो किसानों के लिए पानी का प्रबंध किया गया है और न ही आराम करने के लिए कोई सुविधा है। अगर इस बारे में वह किसी संबंधित अधिकारी या कर्मचारी से बात करते हैं तो वह तसल्लीबख्श जवाब नहीं देता।

उधर एसडीएम शाहकोट कम मार्केट कमेटी के प्रशासक को फोन पर संपर्क किया गया तो उन्होंने इस संबंधी कोई भी स्पष्ट जवाब न देते हुए प्रबंधों को दुरस्त करने की बात कही।

नदी के तट पर बसे कन्हानवासी प्यासे

कन्हान/कामठी. कन्हान नदी के तट पर बसने वाले कन्हानवासी इन दिनों पानी के लिए तरसते नजर आ रहे है। नगर परिषद द्वारा दो-तीन दिन के अंतराल में जलापूर्ति की जा रही है वह भी दूषित होने का का आरोप नागरिक लगा रहें हैं। नगर परिषद द्वारा की जा रही जलपूर्ति में पीले रंग का मटमैला पानी नलों द्वारा घर में पहुंचने की शिकायत नागरिकों ने की है। ज्ञात हो कि इन दिनों सूरज की गर्मी अपने चरम पर है।

पीने के पानी के अलावा कुलर आदि में पानी की खपत ज्यादा होने से पानी की मांग बढ़ गई है, किंतु नगर परिषद द्वारा जलपूर्ति दो-तीन दिनों के अंतराल में किए जाने से लोग इधर-उधर पानी के लिए भटकने पर मजबूर है।

दूषित जलापूर्ति को लेकर राजनीतिक संगठन भी अब आगे आते नजर आ रहे है। पूर्व पंस सदस्य राजेश यादव ने नप कन्हान-पिपरी के प्रशासक को एक ज्ञापन सौंपकर वार्ड क्र. 4, 5 एवं 6 में हो रही अनियमिता एवं दूषित जलापूर्ति में सुधार लाने की मांग की है। विज्ञप्ति के अनुसार पिछले तीन माह से वार्ड क्र. 4, 5 एवं 6 में जलपूर्ति में अनियमिता हो रही है। यहां के निवासियों को दो-तीन दिनों के अंतराल में जलप्रदाय विभाग द्वारा जो दूषित पानी की आपूर्ति की जा रहीं है।

आंधी-बारिश में 7 की मौत

जयपुर। आंधी, बारिश और ओलों ने राजस्थान के कई इलाकों को अस्त-व्यस्त कर दिया, इसमें सात लोगों की मौत हो गई। आए अंधड़ और बारिश-ओलों की मार से प्रदेश के अधिकतर शहरों में दिन का तापमान 2 से 7 डिग्री तथा रात का तापमान 0.6 से 6.4 डिग्री तक गिर गया। जोधपुर जिले के खेजड़ला में चल रही फिल्म 'एनएच-10' की शूटिंग के दौरान आए अंधड़ से अभिनेत्री अनुष्का शर्मा भी घबरा गईं। सीकर जिले में आए तेज अंधड़ से लढ़ाणा निवासी 90 वर्षीय वृद्धा मूंगी तथा गुलाबचंद की मौत हो गई।

जैसलमेर जिले के जावंध नई गांव में में निर्माणाधीन मकान की दीवार ढहने से युवक रामचरण व युवती सुशीला की मौत हो गई। जोधपुर के पावटा सी रोड स्थित एक कॉम्प्लेक्स से निर्माण सामग्री गिरने से दो मजदूरों की जान गई। पीपाड़सिटी में श्रमिक के छत से गिरने से मौत हो गई।

जयपुर में नहीं बढ़ेंगे प्याज के दाम

जयपुर। प्याज एक बार फिर जायका बिगाड़ सकता है, लेकिन जयपुर में फिलहाल भावों में वर्तमान और भविष्य दोनों में ही तेजी के आसार नहीं नजर आ रहे है।

अभी थोक मंडियों में प्याज के भाव 6 से 10 रूपए प्रति किलो बोले जा रहे है। खुदरा भावों की बात करें तो यह 10 से 12 रूपए प्रति किलो के बीच चल रहे। जयपुर की मंडियों में प्रतिदिन 20 गाड़ी (250 टन) प्याज आ रहा है, जो कि मांग से ज्यादा है।

महाराष्ट्र के नासिक जिले में हो रही बेमौसम बारिश और तूफान की वजह से प्याज की कीमतें 40 फीसदी तक उछल गई हैं। देश की सबसे

बड़ी प्याज की थोक मंडी लासलगांव एग्रीकल्चर प्रोड्यूस मार्केट कमेटी में पिछले एक हफ्ते में प्याज की कीमत में जबरदस्त तेजी देखी गई है।

10 अप्रेल को जिले के एपीएमसी में प्याज की औसत थोक कीमत 575 से 801 रूपए प्रति क्विंटल थी। पर 17 तारीख को यह 750 रूपए से 1011 रूपए प्रति क्विंटल तक पहुंच गई।

ओलावृष्टि से भामाशाह अनाज मंडी में खुले में पड़ी 60 हजार बोरी जिंस भीग गई। जिससे करीब 25 लाख रुपए का नुकसान होने का अनुमान है। तेज बारिश से मंडी में खुले में पड़े 5000 बोरी गेहूं, 2000 बोरी धनिया और 5000 बोरी सरसों भीग गई। एसडीओ राजेश जोशी ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। कृषि उपज मंडी समिति के सचिव एमएल जाटव ने कहा कि किसानों को मंडी समिति से तिरपाल उपलब्ध करा दिए गए थे। मंडी में एक लाख बोरी माल शेड में रखने की जगह नहीं है। इसलिए कुछ माल के खुले में ढेर होते हैं।

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.

137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR

Products Range:-

- Micronutrients
- Mixture
- Secondary Nutrients
- Growth Promoters
- Bio Stimulants
- Bio Fungicide
- Bio Insecticide
- Bactericide
- Wetting Agent
- Zyme
- Tonic

WE WELCOME YOUR INQUIRY

CONTACT DETAIL

MR. ALOK BENIWAL

MOB: 9660258447

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,**Email:info@srushtiagronews.com, website:www.srushtiagronews.com. RNI No.MAHHIN/2013/49425**